

DPN 5315

Title : शक्ति संगम तन्त्र ŚAKTI SAṅGAMA TANTRA

Run. No. 6006

Cat. No.

Micro. No.

Subject Tantra तन्त्र

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 9 x 24

Folios 77 Lines (in a page) 9

Compl. / Incompl.

Chapt. / act / First Part प्रथम खण्ड
Patala 1-21 प्रथम पटल - एकविंशति पटल

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water / ink

Beginning, colophon, post-colophon :

Col. इति श्री शक्ति संगम तन्त्र राजे मदहोभ्य महायतारा संवादे प्रथम
खण्डे त्रिगमधेनवादि योगे एकविंशः पटल ॥ ॥ श्री उमामहेश्वराभ्यां नमः ॥
॥ शुभं ॥

CENTIMETERS

15

10

5

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS



20

15

10

5

0

5

10

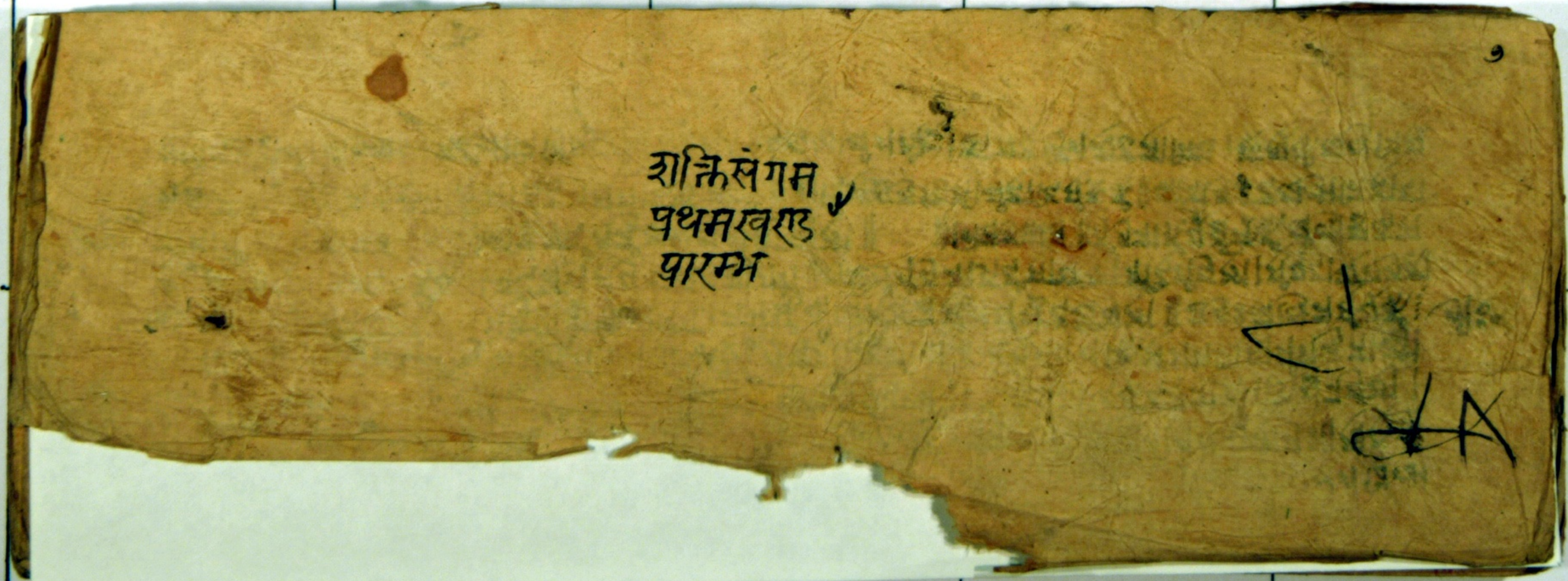
15

20

25

30

CENTIMETERS



शक्तिसंगम
प्रथमखण्ड ✓
प्रारम्भ

Handwritten signature or mark in Devanagari script.

20

15

10

5

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

वि॥ साकपातसुनाजागाभवाभाकामुना॥ अथ कुरुनिगादवपथमाकुरुनमरुव॥ अविनामरुना
 यनननवाकुरुयना॥ नकाविनामिवसुनामभमनविद्यन॥ सदायागुलवकुनिनामदायनमवना॥ विस्र
 त्रपाविदानदायनवुस्रवकेवर्त॥ यकुरुनिविद्यमानायाधकुरुनिनसीयस॥ यकुरुनि४यनमा॥ विदुनि४यनिवि
 वना॥ आयाकुरुमदाकातीद्वीयासुन्दरीसुगा॥ नकवपुमदभानिद्वीयावातुनवी॥ चरुधीर्यवमीविद्या
 यस्यायासाकानता॥ पुप्यवमनासा॥ विपुप्यवमीपकीरुता॥ गमायात्रयभात्रपुप्यवमागिवावना॥ विपुप्य
 विपुप्ययागाविपुप्यमागधयन॥ गमासदाविवाजागसुलपासमनः॥ विपुप्यवमायनमभानिसौन्दर्य
 वस्युता॥ सोन्दर्यपुप्यवाविनिपुप्यवना॥ आयापीनिपुप्यकातीवाद्यामीगायनासुना॥ पुप्यवपुप्य
 वानीसयागभयगयकुरुवना॥ पुप्यवमीनविद्यासुन्दरीपनिकरुता॥ यदानखधुनपुप्यसुन्दरीसमनाहनी॥ ग
 दानाखपुप्यवायसजाग४यनमभनी॥ नकि जेमहमादिपुप्यमागनामनकदा॥ सर्वमिदुनिदवमिजगदकव

श्री०

३६

नाचनी॥ पुप्यकुरुनिनीमकिनकायनागत्रिपी॥ खरुया॥ विगादवखवावसुत्रपिधी॥ विस्राभुमसादवान
 कात्यागस्यपुदनि४॥ विस्राभुमसाविपुप्यमागत्रिपी॥ साकपातसुनाजागाभवाभाकामुना॥ अथ कुरुनिगादवपथमाकुरुनमरुव॥ अविनामरुना
 यनननवाकुरुयना॥ नकाविनामिवसुनामभमनविद्यन॥ सदायागुलवकुनिनामदायनमवना॥ विस्र
 त्रपाविदानदायनवुस्रवकेवर्त॥ यकुरुनिविद्यमानायाधकुरुनिनसीयस॥ यकुरुनि४यनमा॥ विदुनि४यनिवि
 वना॥ आयाकुरुमदाकातीद्वीयासुन्दरीसुगा॥ नकवपुमदभानिद्वीयावातुनवी॥ चरुधीर्यवमीविद्या
 यस्यायासाकानता॥ पुप्यवमनासा॥ विपुप्यवमीपकीरुता॥ गमायात्रयभात्रपुप्यवमागिवावना॥ विपुप्य
 विपुप्ययागाविपुप्यमागधयन॥ गमासदाविवाजागसुलपासमनः॥ विपुप्यवमायनमभानिसौन्दर्य
 वस्युता॥ सोन्दर्यपुप्यवाविनिपुप्यवना॥ आयापीनिपुप्यकातीवाद्यामीगायनासुना॥ पुप्यवपुप्य
 वानीसयागभयगयकुरुवना॥ पुप्यवमीनविद्यासुन्दरीपनिकरुता॥ यदानखधुनपुप्यसुन्दरीसमनाहनी॥ ग
 दानाखपुप्यवायसजाग४यनमभनी॥ नकि जेमहमादिपुप्यमागनामनकदा॥ सर्वमिदुनिदवमिजगदकव

१२

[illegible]

यवस्तान्मृगान्वाकर्मण्येवद्वानिमायाप्रकृतमवर्तमानं
 माणस्यादुष्प्रविष्टाश्चकर्मणः॥मयामतन्मृगुत्तम्याकृतगुणध्वनः
 सदा निवेद्यार्दकानंयनंनर्तनंनर्तनं
 सृष्टिस्तयस्त्वनिनाभनैत्तुग्रहःकुम्भयचर्कजागयिनगहाकुमायया॥वभश्चवमागक्षगलाधु
 दननन॥मकुक्षुवनाश्चकृताश्चसृष्टसंस्कृष्टः॥ज्यमक्षप्रिभाप्रकृष्टविंदकमभव॥आदिराजाधि
 र्वंदहवर्कगथाडक॥प्रिभाकृष्टिर्गदविनवर्तान्मृग्यत्नगः॥युनीषदुमेथगतात्तकार्काचीकुम्भव॥तीका
 यूयल्लिखमक्षमथलागप्रिष्ठितायनिनासमरागलात्तनृकार्यनियोजिता॥तीकागीदकृतागुत्तप्रवेसा
 गतास्तृता॥नृगदीपामदगानिर्स्त्रात्तदादनेवह॥समृद्धासपूदवमिसागनाकप्रकीर्तिता॥स्वाद्दकाक
 दवानिगुववउवानतः॥नदकननकायाकासथलागवगीयनी॥तीकाकुहमिमथलासर्वनादिसमानि
 व॥गंधमादनपाववहिसमनृयकीर्तिगः॥नइहनेस्वमेहमिहगताकाप्रकीर्तिता॥उययप्रह्लाताकाश्वम

20

15

१०

लनिगमयनिकीहिगशासमयकासिकाहानिजिनाकणिकमधवा। वरुयदवाकननाप्रियदंरुजुमिनी॥ अ
 थवेनानाधिकानरुप्रियानकिदावनधगलुमववर्धदविवाकनीदानगधनग॥ सैलानप्रवतुयस्यरुप्रियानी
 द्विजवनध। वरुःयदावाकननाप्रियदकिप्रियासुग॥ वरुदममहाएनसुजेगोसुदनीगृह। दिक्कलान
 सैर्याउपातासयमिनीगृह॥ तत्सैर्यामहाएनामृत्प्राक४यमिष्टिगृहमिद्वाननिवनाथनीदवानामा
 घसैनिभा॥ सनसुगीगृहददिकुमाहृष्टगयाद्विगि। मरुमेवमधयनीसोत्रवेषवमव॥ वीरुददवदवमि
 गानाषट्दमनानिवा। वीरुदवेषवसोत्रमेवमधयमव॥ वीरुददवदवमिप्रयादमनानिवा। वीरुदव
 उर्वजनेवीननीसमदधनि॥ वीरुददमनानिवा। वीरुदवेषवसोत्रमेवमधयमव॥ वीरुददवदवमिप्रयादमनानिवा। वीरुदव
 र्नी॥ अष्टादमयुनाभनिगयेवायपुनावर्नी। वीरुदमदिमदविउयवदस्यपावमि॥ अष्टादमयुनाभनिगये
 वायभमानिवा। उकावर्नीवत्तमिकासिकासुदनीगथा॥ वीरुदमदिमदविउयवदस्यपावमि॥ अष्टादमयुनाभनिगये

नी००

10

०॥

5

तिनीगानाप्रिजटाकायकासक॥ वरुकासुदन४मंउम। वरुदुगवात्मक॥ अष्टादमयुनाभनिउयसैर्यावियावमि
 सुमिर्वदस्यदवमिउयवदस्यसैर्यामि। वरु४षष्टीकनादविचरु४षष्टिदिसिद्धयश। गथयनिषदाच्युद्विपंचाम
 त्मदधनि। यनिमष्टादिदवमिचरु४षष्टीरुवकि॥ वीरुदमदिमदविउयवदस्यपावमि॥ अष्टादमयुनाभनिगये
 काकोमदीकृताहृष्टा॥ दीयिकानाचरुःषष्टीयकाभानचिसुगि। सैर्यायनानार्थचामसुनाार्थवर्नीमि॥ वीरु
 काकोमदीकृताहृष्टा॥ दीयिकानाचरुःषष्टीयकाभानचिसुगि। सैर्यायनानार्थचामसुनाार्थवर्नीमि॥ वीरु
 वाप्रुष्टादिवाहनाईवमिसिलागुविनो गी॥ मकिंसंगमनामाख्यगुनाजदहात्मक॥ वरु४षष्टीसमायुक्तंननुना
 जालमालम॥ यैवाभदुदयेयुक्तंषट्पंचकसैर्यामि। वीरुदमदिमदविउयवदस्यपावमि॥ अष्टादमयुनाभनिगये
 सुप्रवष्टाभुमकु॥ अनेकानिचदवमिउयवदस्यपावमि॥ अष्टादमयुनाभनिगये
 यदालासुदनादीयभवावर्नी॥ वीरुदमदिमदविउयवदस्यपावमि॥ अष्टादमयुनाभनिगये

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

श्रीः०२

[illegible]

20

15

११

हाथपायं नृपयत्ननर्मां वी॥ मृगमुननर्कया यागस्वस्वकस्मान्सा नगशाला लहर्न मरुभनि पितृना कवुर्ः
 मिग॥ गतावजनिनेदविस्वयसा कयमिग्रही॥ गगल्लुपुर्नगळुनल्लुगवजग॥ गानल्लुगवजग॥ गानल्लुगवजग॥ गानल्लुगवजग॥
 मोवषमियागग॥ मुवदल्लुगदल्लुदिन्दुपल्लुग॥ दल्लुविनामरुभनिनृपापिकापिदुभने॥ नदल्लुगद
 ल्लुगवजग॥ यकगादनपुनर्थुसुनसवजकुलि॥ यवकुपुवजकुषीदल्लुदापिगमवज॥ ग
 दवपाथगदविनादल्लुसुयमिदुन॥ नाधिकनववेपुन्यायगजकुलि॥ नदल्लुदवदवनिनस्याविष्ठा
 ल्लुगवजग॥ गदवकीकुमीरुल्लुगदकवाचानि॥ युमिग्रहपनिस्वसुनेसिद्धिसेमावन॥ जागल्लुगक
 मादोस्याल्लुदकमृगसुग॥ द्वायाल्लुसिद्धिदविस्वमकुनिवसि॥ युजागयादिर्कवैद्विगयपिनीलिने॥ ज
 नमृगकमादोस्याल्लुदकमृगसुग॥ सुगकदयसंयुक्तः समकुनिवसि॥ जमसुगककदविस्वस्तानदमर्कमि
 व॥ जननादिमृगयुक्तसंस्तानदमर्कमि॥ दिवसादमवेदविस्वगकपिनीलिना॥ दमसंस्तानयोमृगजानसुग

शी १०९

10

5

कवानर्ष॥ जयादिशजनार्कदिदमां लुपुनश्चिया॥ मृगसुगकमगदिदमादपुनर्कमर्ग॥ जीवदीनायथादही
 सवकर्मसुनरुमशपुनश्चनदीनादिगथमकुपुकीलिने॥ द्विगयंरुमयाप्राकैकिमन्यकाउमिदुमि॥
 ददुवाच॥ विस्वगल्लुमिदुमिचकमरुमकादिर्प॥ नदस्यागिनदस्यचवदमकनृधनि॥
 नदस्यागिनदस्यहिरुधमंल्लुपनर्कः॥ उल्लुममथमंवेवृणीयमधमंरुवत॥ उल्लुममिवचर्कस्याल्लुधमंवेवृ
 वंरुवत॥ अधमंकातुचर्कस्याजीवचकुमिगिस्वर्ग॥ जीवचकुयथाप्राकाजीवमनृल्लुधमंय॥ यकाकातुवदः
 विचकाकातुवदः॥ विनृक्तानस्वयंल्लुनिर्विकथाजितदिय॥ अविक्तानसमासाद्युजाकिथल्लुयवग॥
 विकानजायमानल्लुसाधेकानश्चिद्वर्ग॥ जिगर्षद्विदवनिदद्यावनगकय॥ यवविमनिदवनिर्पविकानः
 कयधकमान॥ अद्विष्टमनप्राकाषणमायठवद्वर्ग॥ द्विद्विष्टमिदमां निनिर्विकानकय॥ जिगर्षद्विद
 वनिर्गर्कमनश्चय॥ यागिनीनाचयुः॥ अक्षीकादिनृकामरुधनि॥ वाटान्यासादिगामश्चमकयाथपुकीलि

0 5 10 15 20 25 30

CENTIMETERS

20

15

१८

गा॥ प्रणिमन्मदभानिकाटिसंख्यायकीहिना। गदस्युनिर्गुयादस्यकीहिर्गमया॥ सर्वपात्रगुणं कृत्वा
 वंदसास्यकीमाग। जेवास्यकमिदयाकं नरुसाधनवाच्यथा॥ प्रत्यकमस्यकाटिवाकलाकोटिश्चवाच्ये। श्री
 विद्यायाकनिर्गुयायवा। ममधर्मरुवन्॥ यदुर्गावादिमभक्तदीकायापनमभवि। उरुमभक्तिमादविक्रम
 ल्लसास्यकाटि॥ असास्यकीवैष्णवायकथेनमृत्सपिर्ग। आवृत्तिमवयादविप्रिगर्गस्यकीहिना॥ प्रणिमन्म
 लेखनकिमुजययत्नगमिवाहिसदस्यवास्यमीलेगीमिगक्यामना॥ प्रत्यकास्यगुणं वक्राकमसास्यकी
 दी॥ ५०६००॥ असास्यकमिदयाकं गदामस्यगुणं यमग। गदानन्दहेनवाच्ययाकमसास्यकीव। लक्ष्म्य
 मदभानिचत्वाविमसदस्यकी॥ नगदियुनिर्गदविचरुर्गुमदस्यकी। यक्षीसाहस्यकदविमृगीमिगक्या
 मना॥ दिगर्गविमगिनिमित्ताननास्यकीमिनी। उदुर्विगमिसाहस्यचत्वाविममक्यथा॥ आवृत्तिमदभा
 निप्रिगर्गस्यमभयथा। उवमर्कपूजनं तुल्यवाचनसंयुगं॥ नकास्यकमिदयाकमवमसास्यकीरुवन्। हिसद

श्रीः००

10

5

संवास्यमीजुगीमिगक्यारुवन्॥ असास्यकमिदयाकं पंचवक्रकमभतु। पूर्णरिषकसंयुक्तसुदामा
 ययुदीकिग॥ यदुर्गावक्रमीदविकेयादसास्यकीमाग॥ असास्यकस्यविज्ञानीनिवचनसंयय॥ निना
 दयधनंदयदयधुयत्नगमिवा। वसुधैवकुटुंबमिदं॥ नेहस्यामिनदस्यदिगमया। द्वायमद
 यनि। याकमनमयादविकिमन्यकाकुमिदुमि॥ नगस्यरुतवाह्यमयावक्रुनेमभक्त। मियादवाभियस्यक्षि
 यक्षक्याधकाविधी॥ श्रीनृपं तुमदभानियदिचिह्नगगीतर्ग। नकावधुवनीपूजासमर्पकगगीतर्ग॥ श्री
 दगनमोक्षजगनीगसपूजनं। कृतीरुवमिदवनिनाप्रकायाविवानभा॥ नृपं दृष्ट्वापुनमनूयमानेनकान
 की। नृपानन्दसमायागकमन्ययथाजनं॥ नृपनृपयनंभमनूयनृपयनंनयेननृपसमं वसुनरु
 नरविद्युनि॥ अमिर्कयनभ्याकं किमन्यकाकुमिदुमि॥ ॥ श्रीगुणमनूयनं नृपं नृपं नृपं नृपं
 स्यकनिनृपनं नाम॥ श्रीयः०००॥ ॥ दक्षवाच॥ असास्यकं लयायाकं सर्वसिद्धिर्ननुविदिंसीयदाय

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

20

15

10

5

0

CENTIMETERS

ज्ञानसौ

मा (ग) यो यो न न क्री हि न न न व द म हा द व य द ह न व व स र ॥ नि व ड वा व ॥ न द मा नि न द स र व क ॥
 क मृ ॥ क न त (ख) व का मी न (अ) ठ मा ग मृ गी य क ॥ ख ट य न म द न र द स र व क ॥ य नि कृ गि ॥ मृ द्वा द न मृ द वा य
 (म) ठ मा ग मृ क्री हि न ॥ न या त द न मा न य क र्ति म न मे ह न वि ॥ आ यो व ह स मा न य स मृ डा न म द न वि ॥ क न त
 ख क म ॥ प्र क र्क न वि न गि द न क ॥ न द न द (म) द व नि का मी न ख क म ॥ २ ॥ ॥ क न मृ ह व द वा प्र व द वा प्र वि
 का य थ ॥ क न त दि क म (व) नृ पा प्र वि नि र्भू य ॥ वि म्भ मि प्र क पा र्त्त क न म पा न क्री हि न ॥ य नृ कृ मी क पा र्त्त क
 मी न ख क म र व न ॥ म हा क पा ल पा प्र व (म) ठ मा ग मृ क्री हि न ॥ क पा र्त्त वि वि र्भू य क र्त्त स प द य क म र व ॥ म हा क पा र्त्त
 वि वि र्भू य क र्त्त क र्त्त क र्त्त ॥ क पा र्त्त क र्त्त क र्त्त स प द य क म र व म हा क पा ल मि वि न ॥ सा मा
 न्या र्त्त स्टा टि र्त्त स्टा टि र्त्त मि वि न ॥ नो य म र्त्त म हा मी न सो व र्त्त उ नृ पा प्र क ॥ र न व कृ मी र्त्त वी न ख र्त्त
 र व न ॥ म कृ मी र्त्त क र्त्त र व य गि न्या कृ मी र्त्त क पा र्त्त ॥ व सि पा र्त्त म र्त्त र व य गि न्या कृ मी र्त्त ॥ न त र्त्त मी न म हा मी न त द र

य ३

व त प्र व र्त्त क न त ख क म ॥ प्र क र्क न वि न गि द न क ॥ न द न द (म) द व नि का मी न ख क म ॥ २ ॥ ॥ क न मृ ह व द वा प्र व द वा प्र वि
 का य थ ॥ क न त दि क म (व) नृ पा प्र वि नि र्भू य ॥ वि म्भ मि प्र क पा र्त्त क न म पा न क्री हि न ॥ य नृ कृ मी क पा र्त्त क
 मी न ख क म र व न ॥ म हा क पा ल पा प्र व (म) ठ मा ग मृ क्री हि न ॥ क पा र्त्त वि वि र्भू य क र्त्त स प द य क म र व ॥ म हा क पा र्त्त
 वि वि र्भू य क र्त्त क र्त्त क र्त्त ॥ क पा र्त्त क र्त्त क र्त्त स प द य क म र व म हा क पा ल मि वि न ॥ सा मा
 न्या र्त्त स्टा टि र्त्त स्टा टि र्त्त मि वि न ॥ नो य म र्त्त म हा मी न सो व र्त्त उ नृ पा प्र क ॥ र न व कृ मी र्त्त वी न ख र्त्त
 र व न ॥ म कृ मी र्त्त क र्त्त र व य गि न्या कृ मी र्त्त क पा र्त्त ॥ व सि पा र्त्त म र्त्त र व य गि न्या कृ मी र्त्त ॥ न त र्त्त मी न म हा मी न त द र

20

15

10

21

२५

दवगावनदासवा सुवपनमन्वना ॥ सधन्यः सुवविज्ञानी सुवदन्नीमनः ॥ समर्थमयुयाजी च सर्वविद्यान
 ह्यविग ॥ सुवप्रवित्सर्वमनु नदस्यत्र पुनर्विदुः ॥ नान्दात्मापनात्मा सुकतादिप्रदगः ॥ विष्णुमित्रकपासुवा
 सर्वपात्राधिकानयन ॥ कपयोवामदभानि सर्वपात्राधिकानयन ॥ नृकपासुवदनि सर्वपात्राधिकानयन ॥ वि
 ष्णुमित्रकपालस्यार्कपातस्यापि यद्विग ॥ निवेनकायभारान्नोहेकापि विज्ञानेन ॥ गन्धकपातविज्ञानेन हि का
 पिविज्ञायन ॥ कपदीवरुवद्यग्रतदवनातिक्रमः ॥ पात्रमात्राभयनुकानयनमन्वना ॥ हनीयसूटिका
 दविसुकलानिःकलामनः ॥ सूयद्विक्रकनादवि सुकलः ॥ निःकलिनः ॥ प्रवोरुनप्रदनवापनसुकलं मृदु ॥ च
 नुदनेनमात्रेषोर्मायागन्धानि ॥ सुकलः ॥ निःकलिनः ॥ विज्ञतयावीमहात्मः ॥ कासीगानागययिद्विगनामृ
 जतनव ॥ कनताख्यसंप्रदायनानीकला घृष्टन ॥ काशीनाख्यसंप्रदायसूटिका घृष्टन ॥ गेठमागमहम
 निकपाता घृष्टन ॥ काशीनाख्यसंप्रदायसूटिका घृष्टन ॥ नात्रिकलसमादायसूटिका घृष्टन ॥ म

ली १०९

5

असूटसमावर्त्यनगनाभसूत्रकाम ॥ नगद्वंद्वसंहायवान्त्रयं उभाहर्तुं नदवधुमयंकुत्वा यववधु
 मयववा ॥ नोद्यनप्रसूत्रनगनीतुनलादिनगक ॥ समासाग्रमहभानिगनाभसमावनन ॥ नगयुभस्यम
 उसूत्रकायमहभनि ॥ गीद्वं सुसूत्रयवमासाधपानकीर्ति ॥ नदयसूटिका कचका श्रीनाख्यमगामर्गि
 काभयानिनुपावा सूटिका ॥ गेठकपातसंप्रदायनासायसूत्रमावनन ॥ उद्वानायकनस्यग
 काशीनयविमालव ॥ विनासाखावेषुवाखादकिभान्नायववा ॥ पूर्वचनयशाखागमुहवगेठनववा ॥
 विद्यासंकनरुदायार्कपातनानिधीय ॥ महामखयनकसूटिका मालयाजयन ॥ कपातायवनादवि
 सूटिका नयद्वीयागाना निधुयवकसंखारुदकमभव ॥ संप्रदायकमलेवपात्रानेकायननिवा ॥ महाक
 लाकलानेधवा ॥ मिश्रयणवयन ॥ सामान्यायवदादो सामान्यायद्विभक्तुगः ॥ सुकलानिकल ॥ चवसुकला
 हानप्रुजना ॥ निःकलः ॥ कवसायनिःकलः ॥ सर्वगभव ॥ सामान्यायद्वयदविघट ॥ खवगनीयकः ॥ विग

0 5 10 15 20 25 30

CENTIMETERS

20

15

23

कुमारावतु। आनन्दवानदवस्य कुमाराक्रमदन्विनि॥ सामान्याद्यविषयाद्यकृतम्। अत्र नृपवा। एतस्य
 दोषास्तु सामान्यपनिषया॥ वसिष्ठाग्रामनीर्यवश्रुतिनिवपावर्तनी॥ पंचमानन्दनाथस्य मन्त्राक्रामेया
 गव॥ पंचकलागमकीचविश्वरूपरिषिभूतवत्। दवीगुह्यरामकीयागिनीवीनयापुनः॥ वसिष्ठाग्रामनीर्यव
 श्रुतिमियागवपुनः। हृदिसंहानेमागनेयनिवहकुमभव॥ उडुनं वडुनस्यवकामवपुनववर्तनी। जालधनं
 दवर्तुमश्रुतिमिनिवर्तनी॥ मखमवालागपुनः वसिष्ठाग्रामनीर्यवव। स्वदक्षिणादिवागमसंज्ञायपुनः॥ श्री १०९
 वा॥ कृतनाथमर्ग्याकृतं नवस्यमर्ग्य॥ स्ववामनागदवमिश्रुतिदिह्यायनक्रिया॥ याथावचमनीयानि
 सामान्याद्यविषयकं। सामान्याद्यष्टादविनीयागुदवतपुनः॥ स्ववामदेनमन्त्राक्रमधूपकामदन्विनि। ग
 दक्षिणावमनीयाद्यष्टनसंवतन॥ निवासाख्यमर्ग्याकृतं नवस्यमर्ग्य॥ श्री ११०
 गृह॥ श्रीदक्षिणं नवस्यमर्ग्याकृतं नवस्यमर्ग्य॥ अत्र पण्डितगणपतिं वसिष्ठाग्रामिनापुनः॥ यागिनीवीनयापुनववामाः

10

5

वरुकुमभव। सामान्याद्यष्टववशीयागुदवतनर्ग्य॥ श्रीयागुदवतनर्ग्य॥ अत्र पण्डितगणपतिं वसिष्ठाग्रामिनापुनः॥ यागिनीवीनयापुनववामाः
 ट्याकृतं नवस्यमर्ग्य॥ गदकमक्रियापुनवयागिनीनागदककु। गदकवीनयापुनव गदकवसिष्ठाग्रामिनी॥ यागिनी
 वावमनीर्यवगदकवापुनव। पुननाचमनीर्यवमधूपककृतवव॥ स्नानीर्यवाकृतीयमिनामीनाख्यवत
 रिषा। कृतनाथनर्ग्यववतथपवापुनवगिनिवत्॥ गदाष्टादविनीयागिनीमीनाख्यमर्ग्यव। सामान्याद्यविषयकं
 श्रीघटस्थनमन्विनी॥ घटाकृतं नवस्यमर्ग्य॥ गदकवीनयापुनव गदकवसिष्ठाग्रामिनी॥ यागिनीवीनयापुनववामाः
 यागिनीववापुनव। गणपतिं वसिष्ठाग्रामिनापुनव। याथावचमनीयानि सामान्याद्यविषयकं। सामान्याद्यष्टादविनीयागुदवतपुनः॥ स्ववामदेनमन्त्राक्रमधूपकामदन्विनि। ग
 दक्षिणावमनीयाद्यष्टनसंवतन॥ निवासाख्यमर्ग्याकृतं नवस्यमर्ग्य॥ श्री ११०
 गृह॥ श्रीदक्षिणं नवस्यमर्ग्याकृतं नवस्यमर्ग्य॥ अत्र पण्डितगणपतिं वसिष्ठाग्रामिनापुनः॥ यागिनीवीनयापुनववामाः

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

20

15

10

5

0

CENTIMETERS

28

वीषददविष्ठाकाउमूनसानदा॥ अनदरुनंदर्वरुनवनप्रगयेयत् । वतीनरुगल्लमदीनयागिन्नायागि
 नीनिव ॥ हृदिदविषिनिषेवलीपात्रनरुसावृत्तं । विमषेवदुदपाक्रासुग्रीजसनव ॥ अन्यविषेवसामा
 न्यपात्रनयनमन्थवि । वीनपात्रनसाकममकावाक्रादिमानन॥ विमेषावाद्यामृतासापुतासर्वगारुमाः
 पुण्यावृत्तीमहमादिदवगाथानिवदनं ॥ प्राभयामसमाचर्यथउद्धावननन॥ पुननावननयुष्मपव
 वाउभवेदम॥ जयकुलासन्निवद्यप्राभयामादिपूर्वकं । पुननावननयुष्मपुत्रमावननकम॥ सर्वकमः
 दवमिसर्वावृत्तिप्रयुजयत् । पुण्यावृत्तीप्राक्रमडादभयिद्विषिपूर्वकं ॥ अनुक्रमडावननतदायुधमयीरुवत् ।
 संपदनाथानिमडाखेवनोचनदायुध ॥ यद्यवननसंक्षयसुदावनमयीयसा । विरान । वसुदेवमिसर्वादो
 पोसुदकका ॥ पुनःपुण्याजिनिदत्तासायु । निसवाहनो । समक्रीकसमूडावससिद्धिमिसम्वनेन ॥ संपदायु
 यपिप्यात्काजानुसमयाप्रय । सामान्यायचठादविमेषाद्यस्तुगीयक॥ यानुयक्रमेलेवपूजनवाहवत्

गी००९

निव । सामान्यविमेषवलीघटस्थगीयक॥ कवर्तुविमेषवपूजनवामदन्वि । गेठमाजमहमनिः
 पात्राननिर्भयं ॥ सामान्यद्विगयदविद्वानदवानुमार्जन॥ दवागुहविमेषाद्यघटाकुरपात्रको । प्रीया
 प्रसूदवनिविमेषाद्युपकीर्तिना । रागपात्रगमादविनक्तिपात्रनन॥ निव ॥ यागिनीवीनपात्रुवसिपात्रनन॥
 निव । आचनीयमहमादिप्राक्रमन्यादिमषन॥ अथययुनायात्रुनवीपात्रुनन॥ अक्रियाग्रीयागिनीवव
 सियात्रुनन॥ निव ॥ अर्थस्यगीवियात्रावियाग्रस्यायिग्यरुवत् । आचमनीयगुयदविमध्ययुक्तनन॥ निव ॥ स्नानी
 यकनमुद्धिचययुगेठविमिसुन॥ सुदक्षप्राकवीपात्रमादोयाहिःप्रयुजयत् ॥ विविदद्याविसंग्रहप्राक
 रसियाजयत् । ननसाधनकपात्रपुनन॥ क्वायथद्वध॥ गत्याव्यवाद्यदानेवनत्याव्यवाद्यदानक । आचनी
 यवनत्याव्यवामउमध्यककं ॥ पुननावमनीयचस्नानीयगल्लमान्यसुत् । गन्धयुष्मगभादकृष्टुष्टवामकः
 कात्तनं ॥ स्ववामकाययत्कृष्टवामहस्तनभनयत् । नूआमिगिवमक्तनयाव्यवृत्तावनरुत् ॥ नूकोननमक्त

मङ्कन

15

२१

10

नदवनीयेन संस्तुता। आत्मनया गवस्तु निगमयुष्यादिकानि च॥ प्राकृत्या कृती गाय मय्युपासुतमनुग॥
 साधुसाधकथाम्बुषटे जिहदं तुलं हवन्॥ दादमं तुलं समुद्धं च अ॥ अलागं गथा हवन्॥ दादमं तुलं समुद्धं च अ॥
 सैकाययदुध॥ आत्मनः पूनगा वाम विद्वाणे विलिखदु वि॥ स्वाद्य दामवेद विवाद्याधि दाम प्रिय॥ आनाध
 नस्तुपनं च पूजनं पूनं गथा॥ गन्धपूष्यमधु तस्य विन्यासः पूष्यसंययः॥ अमृती कनर्ध पार्थुनिय किरियं नव
 सामागे उ विविनयं संकयं यका मिना॥ यागानां विमं गिनिव सामागे उ विविनिव॥ आद्युग्यं तु नूतं गमिच्छ
 यामिनी निव॥ वीन पार्थव स पार्थ पाद्याद्यं च मनीयकं॥ कनका सेन पार्थव मनीयकं॥ सामान्या र्थ दावमानम
 र्थं च कनू कुक्षिनी॥ उच्छिखर वलि पार्थव वसियाणां स प्रव॥ अथ यो च क पार्थव कन॥ अमु उ विविनिव॥ एका विमं गि
 पाजा नि॥ अमु उ व गृह सं गि च॥ अकृपा क मिदो द विवीन॥ अकृह अं कनी॥ नखं न मुख द व नि॥ अवे अक न कान यन्॥
 ताक सं दर्भ नार्थ ह सं ख स्य ह्या पनं च न॥ अवे य कि क म ले व यागानां ह्या पनं च न॥ सामान्या र्थ विमं गि च ट थ

गीः००

5

पाद्यपात्रकं आचमनीयं गथा र्थं वपुन नास मनीयकं॥ मधुयका मृगद विस्तानी र्थं कृती गथा॥ अक्रियका यदमं
 उरुदाक तम पूजनं॥ ना वं तुलं स व ह्या य पूरु वेदिक कर्म र्थं॥ पूरुदी को ययु क्त्वा च क्रिया ग्रादि कं हवन्॥ वि
 खपात्र दव निवि अमि गृह वा चे न॥ वे पु वं म द म नि यन॥ सामान्य पात्रकं॥ नख पार्थ वाम ला ग सामा दे व स्य
 पार्थ गि॥ पूजा द र्थं द कृता ग न म॥ अय न मे न्व र्थं॥ वे पु वं द व द कृ तु न ख ग दि कृ पा र्थ गि॥ पाद्या र्थं च मनीयं च मधुय
 कं क मा ह वं न॥ गृह द क द ट या र्थं तुलं सैका य नाय च॥ सिद्ध क स्थि ग दि द्या ग द्वा म द क च थ हवन्॥ अक्रियका वे पु
 व स्य पा क म न म या ग वी अय क स्य म द म नि न सामान्य घटा हवन्॥ विमं गि कित॥ अस्या च्छु क्रि वी ना दिका न यन्॥ अ
 वं ह स्य द कृ तु सामान्य ह्या क्रि नी मि च॥ गद न क्का य थ द वि सो न म ह न्व रि॥ सो न॥ अमु उ व सामान्य द्रा व र्थं स्य र्थं ग
 च न॥ विमं गि कृ ध म र्थं च ह्या य थ न म न्व रि॥ जे न वो ह्नु ना ता व ह्नु व कानिका विप्रि॥ दर्भ नो य न गा द वि विमं गि
 र्थ घटा दि कं॥ प्राकृतं समासाय कन ता दि क म न च॥ गला अवा र्थं द विमं ख ह्या च म न हवन्॥ सामान्या र्थ हव

३

20

15

10

28

दावितामार्गविलम्बकं ॥ श्रीयागमिनिदवमिवायसायमुवायिव। गलमवयुकरुर्गनान्यथामरुर्नव॥ सर्व
 नमस्क्रियागलम्बकवयनमम्बनि। वामावर्कमलेवलेमठकोसहयागदं॥ काश्रीनदकरुदनकनसमभुनक
 माग। कवलनैखमपिधकनसवनिगार्थना॥ पूजायकनर्धदकपृष्ठनैवयववाकनकानधमापिहसपृष्ठयनि
 कीर्तिने॥ घृणदीपाहवदकनैसदीपादिवा मग॥ प्रिकाभकानगावापिवह्निचक्रमधव॥ मधदीपाविभेदवि
 कायनैयनिकीर्ति॥ सर्वपाणिसेखायसेवामनुघटाहव॥ घटस्यमुमुखदवियनिगयनिकीर्ति॥ नैखस्यदवी श्री०
 नैखस्यमुखदवगागन॥ पूजयामीगर्भयामिनामानैकवलनैवम॥ नययामीपूजयामिनमःकाश्रीनगमव॥
 दृढयस्यास्यथागुसासाटुकनसकृति॥ पूजयामीननादविनययामिनमस्तु॥ आदिकनलसात्रमदयुवदि
 कीर्तिगधनम॥ पूजयामीननुकनसयनमम्बनि॥ पूजयामीनद्विदामनसंयदाययकीर्ति॥ अक्षरुदामरुमादिदुदा
 यनप्रयागन॥ मध्यथागदयिमिव सुकनयनिकीर्ति॥ आदाम॥ नैवकवसिदानैनुमेउक॥ आदोवसिदा

5

नैवकाश्रीनयनिकीर्ति॥ अकवसिदं नयययदि ॥ १० ॥ मध्यरुदादविपूजनैगर्भनैवगादि
 पूजाविभदविकनसपूजनैगमि॥ श्रीपूजयामिकादविकवलनैपाइकाचगा। नदवनामयर्भवाइसदीर्घववापि
 या॥ सोविद्वामदयानोवीनमागुन॥ नैवमंरुयाययियावैमि॥ वज्रपृथ्वीपरीवमिह्वाहम
 नप्रपूजनै। वामावर्कमलेवदकवामकमधव॥ कवलनैदकवलेनकवलनैवामदकन॥ रुदाहर्गिमिमिव
 कीर्तिगयनमम्बनि॥ कवलनानदथागनकवलनानदथागन॥ आनननाथयागननाथनदकमधव॥ सिद्धि
 वामवदिद्यादिपुष्पाचैगयवाधन॥ विलासकमयागनगथसनखनैकमान॥ वक्रमानकमलेवरुदावाइ
 यमीनिग॥ कृमिसंकयगध्याकं विलम्बकथगपिय॥ ॥ कृमिग्रीमदकास्यगानासम्वादयागनिधुयक
 यननामवयुधयटन॥ ॥ दयवाव॥ दवगल्लुमिह्वामिनहस्यामिनहस्यक॥ ॥ निवडवाव॥ नह
 स्यामिनहस्यवकथनैधुयावैमि॥ सुदुम्रवासनाकृतापूर्वयनमिवह्निग॥ ध्यानसंयुमिर्जनासावम्रवासना

0 cm.

5

10

15

20

25

30

20

15

10

5

0

CENTIMETERS

वि १

२१

१००

गगा॥ यदा न स्य परं त्रयं सन्दर्भं समानं न । त्रयं धृगमहं निगदान स्य पर्यवगा ॥ यदिकादिमनचर्कवले
 नयनसन्दर्भे । नदायमांससंघेयि महाकालस्य त्रयि ॥ सवस्त्रियामहं निगदासी गाना मयं स्रगा । उर्ववद्वि
 दावत्या त्वहं सानक्यना ॥ सीमानाया किर्यायं पुर्ववार्थं विहिन ॥ अहं गेवमवयनं वेषु वसो न बोद्धं
 उर्वकमवदवमि मगमगद्विनिमिनी । मगानिवरु संख्या निगदान स्य महं ॥ संज्ञानामिहं निप्रयवार्थं
 हिनिप्रुगं । अहं विजने वसमउ ॥ सागनायथा ॥ यथा न तु यथाय कथेगानिमगानि च । वेदिकभाकः
 निदावनेव वेषु वनिन्दनं ॥ वेषु वगवनिदावमुषयसोननिन्दनी सोनवानुस्य निदाववा नुवोद्धस्य निन्दनी ॥
 स्वार्थं वस्य निदाववोद्धमा अमहं ॥ सोरय्यचिनि निदावचीननेन स्य निन्दनं ॥ पुना ननेन निदावजेन
 योना ननिन्दनं । योना ननेन स्य निन्दनं यनमथ ॥ धर्मभा अमहं निगथको तिकनिन्दनं । उर्वहिनः
 मगान्यव संज्ञानामिहं ॥ वदानां भखा वा र्थं पुर्ववार्थं महं ॥ उर्वनिदासमायनं रदजा नामहं ॥

नेदं प्रमनानमं कस्य वित्यनमथ ॥ सवस्त्रिया न्य निदाव गदं क्वच प्रजायनं ॥ गदं कस्य सुसिद्धाथ पुर्ववार्थं प्रक
 लिगा । निवहिनं पुसं सगिनिन्दं निचयनस्य ॥ नविद्या सिद्धिमाया नि सजमकी पिभा चवग । अनायं यादिनिन्दन गदः
 क्वच प्रजायनं ॥ गदं कस्य सुसिद्धाथ का सिकाना विनी यजगं पुन वदं नाना अय रकान् गदं यव ॥ सन्दर्भं क्वच
 पुन पुनार्थं विजगीमिवा । त्रयमगस्य वार्थं की हिनं मया गव ॥ पुनार्थं न्यायमीमांससिद्ध्या गजं तं गथा । वदान
 वा क्वनिदं विधर्मभा अमिनिगा ॥ नुदाका निवेष्टकादि विद्या न गान् वदं मया पुर्ववार्थं मयाया क्वमेव लयनिभा
 मज्ज ॥ अहं क्वच गदं विमृषाव हिगा रव । उर्ववदं न्यनीषा क्वानी महा रवगा विनी ॥ अथ वदं विद्या विद्या नी महा
 का सिकायना । विनाकासी विनागाना नाथर्व वि विष्टविग् ॥ कनसका सिकाया का काभी नयिपुना मगा । गेठगान
 निमिषाका नेवताका रवगा ॥ रादो गनयमगद्वि संकथनयकी हिनी । अथ कादो कनसु विपुना सप्रकी हिगा ॥
 काभी नगानि वा ना गेठका सीषकी हिगा । निवदवी पनं गगा दकिमा सुहि रदग ॥ अथ नन्देन वाखा मग रदन

20

15

२८

10

5

0

5

10

15

20

25

30

दक्षिणमूर्तिनादविस्वयुर्वर्तकमभवत् । तन्नामास्त्रकमलेवसाधुगम्ययनपना ॥२॥
 पावमि । दवीसकासायथाकास्वयुर्वर्तकमभवत् ॥ मुक्तयनपनायाधुनविद्विन्नामदध्वनि । तन्नामास्त्रकम
 लेवसाधुगम्ययनपना ॥ दक्षिणमूर्तिनादविस्वयुर्वर्तकमभवत् । तन्नामास्त्रकमलेवसाधुगम्ययनपना ॥ अ
 विद्विन्नायदासावेवः मङ्गनयागमः । तदायस्यदायाहिरविद्यमिमदध्वनि ॥ कनस्येवकाभीनमेव
 वरगीयकः । वरुमिपिदवानिगम्यमिगमिधिय ॥ गृह्णामीवपुःक्रीयादिसासपानकमव । इदीमिवदुषस्यमिकन
 सेयानकमव ॥ हास्यामिपुःसास्त्रमिकाभीनयानमीनिर्ग । मदास्यारुवन्नाथविद्यामिद्विदियानगथाअनकमवनि
 थयुजानकीयदानने । नन्दनाथीवस्यकृष्णयामुमानेव ॥ मदानन्दाहिरव्याक्रीयेयानकमाचुः । वामद
 क्षाणेनपूजाकमादामीपकीर्तिगः । दक्षदक्षानथागमादमदक्युगयस्यम । दक्षदक्षालुगनादिकोनस्यविधीयन् ॥
 कवर्तदक्षदक्षपूजनादकिमीहिरवः । मनुवेकनस्यधकः । उक्तमपः । पकीर्तिगः । दक्षिणमूर्तिरदुदियोद्यादियर्थ
 वगः । गृह्णदनेरुदन्त्युयकनचरुदगा ॥ आनन्दनरुदन्त्युयकनीतिउत्कमः । दिवसिद्धिमानवादिप्यवाभीनिपुदी

सा

मी००९

हिना ॥ प्रसक्तविगयत्वनस्युत्कमभवत् । यवपदीतिस्त्राकानामास्त्रनकुमभवत् ॥ नवनाथकमलेवनवर
 दारुवमिवे । चरुनामीमिद्विद्वानाकुमदीकाप्ररुगः ॥ चरुनामीमिद्विद्वानाकुमभवत् । अर्धधनवविद्वय
 नामास्त्रादाययदुः । अर्धवर्कयुवमिषद्वदनाविषावना । साधनासाधकाभीनदियजनेखनरुदगः । गाव
 दकास्यस्यमाहकागवनाकुमान । साधनामपिगुणिर्गसाधकनसमन्विर्ग ॥ सप्ररुमुद्वनङ्गानदयद्विप
 नीगकी । सप्ररुविपनीत्यधमनीधनविमोधन ॥ यस्याधिकीकादवनिमनुवाहिरवमीमनः । गृह्णामीवपुःक्रीयादिसासपानकमव
 समनीयनिकीर्तिगः । साधकस्यधनीत्वंविद्यायामिषनीत्वं । उक्तमपः । पकीर्तिगः । दक्षिणमूर्तिरदुदियोद्यादियर्थ
 यस्यायत्वननियमः । यनकायावर्द्धनं गृह्णामीवपुःक्रीयादिसासपानकमव । गृह्णामीवपुःक्रीयादिसासपानकमव
 मीनिर्ग । वरुमिपिदवानिगम्यमिगमिधिय ॥ गृह्णामीवपुःक्रीयादिसासपानकमव । गृह्णामीवपुःक्रीयादिसासपानकमव
 नाविधिपूर्वकः ॥ हिनाकुत्वाथवादविस्वयुर्वर्तकमभवत् । तन्नामास्त्रकमलेवसाधुगम्ययनपना ॥ अर्धधनवविद्वय

CENTIMETERS

20

रिणि
धनी
चक्र

15

२०

गदयदियनीगर्द। मनुसाधकवधुनायंवागमागुमागु॥ कियरुमाएवदधुलावदकासुसंगदग। खन
 र्गजनरदनत्वथवावधुमागुर्द॥ गावदकासु कलयावधुनामरुथानयि। मनुधुनिगुनीकुलासाधकनसम
 विग॥ सयुहिसुदनहागमदयदियनीगर्द। अयधुपुयकनभाहुननराजनरवग॥ कलकाखनगुननरुजनव
 गकीहिगधय। धाकुकमथा। गनकीहिगमयागव॥ नामाकनादिमानययावत्तुदिमाकन॥ प्रिआकुलाखनरिग। श्री १०९
 रुदयदियनीगर्द॥ मनुयकनमानययावत्तुमाकननिवा। सयुकुलाप्रिआरिग। रुदयदियनीगर्द॥ मागुकावयः
 प्रिखनमनुनामाकनाकर्द। प्रिआकुलादिहिदयासंगनामीनियरवग॥ अयानिगधवका। धिगीहिगानिमया
 गव। रुकिरुयंजर्दविधयवदवधनय॥ काठिरुगुयंजर्दवदययकटीकनम। पूर्वसवानुमानवहकिरुयं
 दटाएवग॥ समनुमुगुनीरुया। रुकिरुयंजर्दप्रिया। नाधुकी। मर्दविहकिरुयंजर्दप्रिया॥ रुमिकमधसंपाक
 जर्दधनवि। धनधन॥ जर्दधनचविज्ञायनामदया। रुमि॥ अयथानामदानगुनामानुयकंरुती। नरवरा

10

5

नममानिगुलाएवगिसाधक॥ समुखलंनजानागिदवदाधयनकतो। सधुमवुविज्ञायनामाकादाययहुन
 ॥ दिगसिद्धीमानवधुसुवउरुनाहनी॥ ॥ ॥ ॥ नामदानकथंकार्यदमनययिषट्ठयि॥ यजामा
 यधुदवेनगधमीएवयुधक। पंचानयनधावदालेखयनमधन॥ मधसासाधुदियाने। साधुधुमद
 धनधनामदानकथंकार्यमधकययमकन॥ ॥ ॥ ॥ नहयानिगदसुवत्तयासंपुननिमिद।
 मर्दजानागिसाकासीगानाजानागिननना॥ आग्राकिविज्ञानगिगणयिदिगुनयिधधसुधधधयनादिदि
 नगार्थयसुदसुविग॥ यदुवजंमगसुधाकंरुगुसुसाविआयक। यधमवधुव। आरुखनव। आदिगीयक॥ रुमी
 यधुनव। आरुखेयुधेकदवधगा। पंचमधव। आरु। यधुवकुलकिचन॥ यदुवजागिमधमानिचजाधन्याययि
 प्रिया। अयानियंरवकाविधुधुजुविआनिव॥ गगधुकुमधुसाधसिद्धिसिद्धक। देवगवचनाखचदव
 माधमनाहिध॥ दवगाधमनरुननामदया। नहयनि। अयगुयकंयनामसाधकयनयेवव॥ यसिद्धनामगु

ग ३

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

20

15

29

षण। श्रीगुणवामिताचक्रं नागादियुगमावर्त॥ नवचक्राणि दशमि कथं भूयत्तनाः कनसाख्यं च दमर्मयुक्तं
 प्रविष्टं वत्॥ नमदिवचनं दविर्मयुक्तं पाकथं भूयत्तनाः प्रविष्टं वत्॥ चक्रं कर्म भूयत्तनाः प्रविष्टं वत्॥ अष्टाकनमर्मसंख्योः
 नीचकर्मकयस्य ना। चतुःपंचाभदवागमध्वचक्रं मोहवत्॥ रंकिरिर्नंदसंख्यातिः कनिष्ठं यमिकीर्तिर्न। उतकाख्यं
 मद्रुमनिप्रविष्टं यमिकीर्तिर्न॥ पंचाभली ० नामावाघट्टिर्न। मद्रुमिमध्वनः दमविद्यात्रयजानी गन्धरुदकमभवत्॥
 कृताकृतकर्मवदकाभीन। मद्रुमरुदगः अष्टकन्यासमायागमकनिष्ठं यमिकीर्तिर्न॥ नम्रकर्ममद्रुमनियथावद
 वक्षानयः मद्रुमायुदवमिर्न। चक्रं कर्म भूयत्तनाः प्रविष्टं वत्॥ नम्रकर्ममद्रुमनियथावद
 नम्रनिजाग्रयत्॥ उमिताख्यमिदं दविगुणवत्॥ मद्रुमायुदवमिर्न। चक्रं कर्म भूयत्तनाः प्रविष्टं वत्॥
 संप्रज्ञानिवासायसादनी। यस्यायथायथाकासागत्याध्वकमध्वग॥ नम्रकर्ममद्रुमनियथावद
 यत्रत्यर्नलरुवागम। चक्रं कर्म भूयत्तनाः प्रविष्टं वत्॥ नम्रकर्ममद्रुमनियथावद

गी ३००

10

5

मिच्छति॥ ॥ दशवाच॥ नम्रवाचरुतं दवि कथयस्व मर्मधना॥ ॥ निवृत्तवाच॥ नम्रवाचनी मद्रुमनिमिव
 वनसंगयः। वयसं रं कर्षणं च गेलाकवधनागध॥ अर्जनीमिसर्कं युधिपाइका उदिकागथा। वगालयति धर्मिदि
 प्रिभावाहसइरुर्न॥ खचयादिमद्रुमिद्विपनकायप्रवर्तनी। मयानूयदुर्गवाकुकामनूयस्वमवच॥ नसायर्न
 चणलाक्षमदं दविज्ञानक। अमिमायुदवमिर्न। चक्रं कर्म भूयत्तनाः प्रविष्टं वत्॥ मद्रुमायुदवमिर्न। चक्रं कर्म भूयत्तनाः प्रविष्टं वत्॥
 काईदयुदस्यजयावध्यात्तनागर्न। योनूयवमनस्वर्नं जकः स्वधुर्नववध। धनदावगधमकायग्रामधूमनीगध॥
 नदस्यामि नदस्यव नदस्यामि नदस्यक। मयनीयं मयनीयं मयनीयं यनः पूनः॥ २॥ मिसर्कयतः पूनः कर्म
 नम्रुमिच्छति॥ ॥ दशवाच॥ दवमल। उमिताख्यमिदं दविगुणवत्॥ मद्रुमायुदवमिर्न। चक्रं कर्म भूयत्तनाः प्रविष्टं वत्॥
 कर्मधकादिकमायुद। दिवसिद्धमानवगमहाकातकमभवत्॥ अगिकालकनासाख्यवीननाथकमभवत्। पंचाभिक
 सनवचकनातदगध्वनि॥ कात्तयमहाकासनवरुदायुक्तमाग। वीननाथमर्नदविगुणवत्॥ नम्रकर्ममद्रुमनियथावद
 स्यं चमः पटलः॥

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

20

15

32

वनाथप्रभुदासिद्धिसार्थकद्वयवत्प्रगुणमयद्वयनिदीर्घकादिसंमग्न ॥ अस्यामवमदभातिर्नराध्याम
 नयागगः सार्वभौमवैद्विजिवादेनिर्गुणमिव ॥ नैकाध्यामनूतारूपाद्वीर्यादमवसा ॥ कातिकादमदाग
 नात्र्यादसर्वदेव ॥ गहयाकवमकीयादिमिसंयुगामनी ॥ कित्वादिशोषयानैचकीर्तिर्गयवमध्वनि ॥ सिद्धिधा
 कायपितृपुत्रानकृयासदध्वनि ॥ मानवाद्यसमूहापकुमादिनयमीधिर ॥ संगीतत्वागुर्वनयसदयानीकृतं
 न ॥ विसर्जनारुर्नदविरुदनाथस्यकीर्तिर्न ॥ वीनतृषुर्नदविवानिकातमनूकर्म ॥ भक्तिपार्नुहायहिर्नदकिंम
 हिर्नमग्न ॥ भक्तिपार्नुचगृहीयाद्दीननाथमर्गमिव ॥ कुलचक्रवर्त्तुलात्मकसंकातिकामग्न ॥ कृताकृतं वाना
 यसिद्धदायनयाकर्म ॥ दिशमागीवीनमागीयमुमानेकमनच ॥ प्रभूरिषक्यागनवाहानामपुदायथ
 प्रभूरिषकंदवमिहादिकादिकमनच ॥ कथंनदवदवमिष्टसावहिगारव ॥ गुरुमासुपकृतं गुरुलम्बुगुणदेय
 ॥ कोतनालीदिनतथा ॥ गानानादीदिनतथा ॥ माहनालीदिनवैवमदानादीदि

10

5

नतथा ॥ काधनालीदिनदविधाननालीदिनतथा ॥ गानानादीदिनवा ॥ अश्वसानात्रियागर्जोदानासंगमवापिम
 नर्कसंगम ॥ विविक्कानमासाग्रहानमुद्रादिपूर्वक ॥ पर्वगविपिनधानेमुद्रागदमभानक ॥ नकतिगानि
 वावासेभानामहकपिच ॥ चक्रयानिगृहंनयायुर्थापीभक्तमिव ॥ पंचाभलीमथवायुधिगुप्तवकपिच
 गङ्गागुरुगजालचक्र ॥ अवासेवसंगम ॥ कृतवृत्तवैवाधिकदलीवनमथ ॥ अथयुगवन्दविनोविक्तवन
 तथा ॥ कदलीमधुपदिशवाटिकायाविविक्त ॥ याताभवनमथचपुन्यकृतिगणन ॥ सन्निधीगृहमथचकृ
 नीनरुमगुत्त ॥ विनिहृक्कानमासाग्रहमधुपगुकात्रय ॥ कलाहर्लस्यहर्लनवदसमदध्वनि ॥ पर्वदसमद
 निनवकृतीक्रमनच ॥ अथवानककृष्णयक्रमपनमेधवि ॥ मधुपकानयुद्धविमनूसाधनमार्जन ॥ ग्रीमनू
 मधुपदवियथादीकानूतानग ॥ विगानधजराग्रयाकानपनिखर्त ॥ गमयनःसंयुर्नदविनानागानमभुर्ग
 दलयनमभानियूजामपुपमाचन ॥ अष्टाष्टकप्रक्रमनयचयचक्रमागत ॥ प्रगासासनिवा ॥ अहियथारुवतिपाव

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

४२

[illegible][illegible]

20

15

३१

10

वाक्प्रीतिर्गोविन्दयवमहानिबोधवदमयावती॥ गद्यपद्यमहानिबोधमनद्वयं एवम्। सोनयवमहानिबो
 धानांममामुक्ते॥ दमयायुयगयाकामुष्टीप्रिमलहन्निभनतलेवकाभीनमेरुहदनयावति॥ कनसरावनाषा
 काकाभीनवानुक्तानां। एतेप्रत्यक्षदानं चक्रमः प्रितयमीति॥ कनसप्रितयदविवटवानिमननिव। उक्तप्रकनसद
 विशुद्धकनसकर्म॥ गद्यपद्यवनादविसर्वाक्यनिकीर्तिता। प्रिभकनसमगद्विवटवानिमननिव॥ नगदामहमे
 निगनासूक्तप्रकाशिता। दिव्यषट्कमहानियुक्तां। यवकीर्तिता॥ आनाथकेतुहादोचपूयचकी। गयेवच। जीवेवकीमहनी॥
 अनिसूयदायागनंमृष्ट॥ दमवगानपूवर्त्तवगनसुदनननी। उक्तादियदपूवर्त्तयवामदीश्वनाकर्म॥ यवामदीश्वः
 नार्थववगनानमहन्नि। यवामकुवाकर्मवगनयार्थवयेव॥ प्रिपुनायमहानिका। माययनमन्नि। नरायवा
 महानिबिनायानुवि। लयग॥ ठाकिन्यायगधदविहववायववाहवत्। नृसिंहायववगनयिंवादमयनपना॥ क
 तहदुल्लानगायी। ममुखीवन्त्यसुधा। विज्ञानीवामनी। इनी। तमे। सिद्धदीकिगथा। विद्यानादु विनासामीसा। माद्यधुनः

5

वच। नगदमयनं जागामहा सिद्धयथागजा॥ स्युदायविज्ञानां कृतमालुपयाजनान्। सर्वगहिगडलूकं सेवाय
 स्युद्रीहिग॥ वदवाक्कायथाकूलयेवार्थयुक्तीहिगननदमयनं यागो नृपुहिपावति॥ गानावनीरागवनी
 गयेवविमतावनी। वग्रावनीमधुमनी। तथाप्रज्ञावनीमगा॥ उहृटावावनीदविनगवाक्कनरुदजा। अनृगहाख्येनः
 नालयेवनिगहानिव॥ निगहानृगहाख्येन। नाजयेननवव। कनार्थनयनामाच। नीचेनयसुधामिव॥ दिव्यवगन्यः
 कादविसुधायज्ञानवाचक॥ अरुवाख्यसुवेनयविज्ञानाख्यसुधेव॥ यानार्थनयनामाख्यसुधेव। सुधेनयनवव। विना
 जाख्यसुधेनयस्यावेनयसुधेव॥ प्रज्ञावेनयनामाच। सादाख्यसुधेव॥ निबो। लख्यसुधेनयनामाचवेनयनवव॥
 अथ। अरुवावेनयनीचेनयसुधेव॥ विद्यावेनयनामाख्यसिद्धवेनयनवव॥ नगकाभीनमार्गलाप्रिपुनाकादिरुद
 नधर्मगवानादववागमायादवसुधामिव॥ कामाख्यसुधेवकीची। अत्रकवानसुधायन॥ नाजवानसिद्धवानाविश्व
 यसुधायन॥ उमरुहववाख्यसुवाकर्मकि। कायसिद्धिपू। रुगरेनवनामाख्यमूर्तिस्थाटश्वविग्रह॥ विनादेनवनामाः

20

15

३८

स्थासुहिवानधवाक्यनशस्वनाह्नवनामाख्यावास्तिद्विभवनः॥संसाद्वनवनामाख्यसर्वत्रयलसिद्धियुक्त
 श्रीमद्वद्वकनामाख्यसायान्गदकृतो॥सर्वगसर्वत्रयसंशोनन्दनवरवर्गान्निगाद्रवाक्यनश्चनयेवजिनयुक्त
 निव॥कुरुददत्तनामाख्यसिद्धिपुष्पसुखेवव।पनकायपुवमपुखवनीचन्द्रनव॥अथसुखिकनर्णकाभाख्यस
 पुदायक।बुजासमहन्दादिकयातीरेनवरवर्ग॥नदीसमुद्रभावादिहीमभाख्यपुदायक।नरदावीनचक्रनसे
 मृष्ट्यावर्णि॥कवर्तदियावाध्वनन्दनोभक्तवाचक॥कवर्तनन्दनामाख्यकवर्तनाथवाचक॥नमस्मिन्निनयदवि
 कर्मधयाप्रतामिव।मानवाख्यमुपानादिसिद्धिवेगवद्वियुक्त॥दियवेगनयुक्तदियप्रदानवच।गुणयुक्तन
 मभानिनाथनन्दकुमवर्त॥नन्दनाथमहामिमिलित्वा।वापसंख्याकथवेगनाकावितासाख्योवापसंख्याप्रवाचक॥
 सिद्धवेगनामात्रयवभापूर्ववर्त्य।सत्याग्रवितासाकायसंख्याप्रवाचक॥सिद्धाग्रवितासाकायसंख्या
 प्रवाचक॥वेगनाकावितासाकायसंख्याप्रवाचक॥सिद्धाग्रमहामिवापसंख्याप्रवाचक॥सुप्रज्ञामहामिनि

श्रीः००

10

5

वापसंख्याप्रवाचक॥सत्याग्रवितासाकायसंख्याप्रवाचक॥वेगनन्दनामाख्यवापसंख्याप्रवाचक॥अनिमाग्र
 पूर्वत्वमेतदन्तमेदम्नि।चत्वारिंशत्यरुदाध्वमादकाकुमपापिव॥चत्वारिंशत्यरुदाध्वकर्मवपनमभवि।आग्रय
 द्धनमेतदन्तमेदम्नि॥सांख्यार्थमथपूर्वमनस्वर्गमभिव।वापसंख्यामथपूर्वमदन्तमेदम्नि॥नर्वकमव
 दवमिदमरुदायकीर्तिगा।विमलवर्तविन्युक्तानाथमदन्त॥संपुदायकयदेविवापसंख्याप्रवाचक।सानस्व
 नयदपूर्वमदन्तमेदम्नि॥निग्राह्यार्थयदपूर्वमदन्तमेदम्नि॥सुन्दर्यकवसिद्धार्थमयान्गदकादिकी॥सुन्द
 र्यकमहामिनिदत्तार्थमदन्तमेदम्नि॥सांख्यार्थमहामिनिदन्तमेदम्नि॥सोराग्रमहामिनिदन्तमेदम्नि॥द
 वीयनयनायाउसंख्याप्रकाभिर्ग॥दियाग्रनीवितासाकायसंख्याप्रवाचक॥दियाग्रमहाप्राज्ञवापसंख्याप्रवाच
 क॥सांसाद्वेनादुस्त्रात्रमधिनार्थवनाचक॥महानार्थयानमभिमधियुक्तव॥सांख्योमश्रुवलीमकानन्दकृत
 वव।वेकानन्दखिदानन्द॥पूर्वमदन्तमेदम्नि॥महासमनसानन्द॥महानन्दकृतव॥वापकर्मवदवमिदन्तमेदम्नि

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

20

15

४२

उसंभानिनी नृजं कृत्वा संयुज्य रयिज्य प्रसादं कस्य च लुक्पी कृपुस्य नि यव दन ॥ सुतुक्तं च वने च यदवगार्थं
 याजका वरुणं वेषु वा यं च निव निन्दय नायथा ॥ वेष्वा नपि निन्दी मयं च नागं च मेना ॥ याख भुख वनं याय याख भु
 सुवकीरिणा ॥ अमो नरुस्य श्री नीच रुस्य अन व संव य ॥ स्नान संस्था दिर्द वि सो किका धं रु य भु नग ॥ विषु द्रव य ना रू
 सर्व प्रकृ ने ग न नः ॥ स या ख पु नि क धि ते ॥ ४२ ॥ का या ति र्द मि व ॥ क या त या ग सं रोजी म य मी स भु ग ले न ॥ श्री या नी द मी
 नि र्द म भु मा ता ध न स दा ॥ अ मी ना ग्री पु री जी व स च का या ति क रू ग ॥ स च द्वा द म आ या को म हा का या ति क ४ प न ॥ स्नान दा
 ना दि न हि ना ॥ मी च ॥ अ च वि व र्जि ना ॥ न ज या न ग य स्या च न ग स्या नि य म ४ क वि न ॥ वृ द्धि ॥ अ र व दी ना स क ता नि ४ क न दि ॥
 ऊ र्द म ४ म र्द म नि क म भु र्ध न ४ स दा ॥ जी व नु व य नी री क रू ह रू स नु व हि ॥ य द व ग सु र्व द वि न सु र्व स्वा स नु य र्द ॥
 स र्ज न क थि ना द वि न र्व वी द्वा द या मे ना ॥ क म र्द र्व क दि वि न ॥ स र्ग ज टा पि य ॥ ग थ न र्क ज टा द वि न ॥ नी ता स नो द य
 ॥ वृ ह रु र नि नि र्वा ना ग सु थ य न म थ नि ॥ अ र्द स क रू अ च र ह दा र्द क य ना म ना ॥ मृ डा धि का नि ॥ अ द वि क थ न मृ र्द स प

नी ४०

य

10

5

नं ॥ वा म्भ (धन ग थ का र्थ) डा म्भ न वि न थ नि ॥ मृ डा क वा म्भ (अ धृ त्वा) नो न र्व न र्क वृ ज ग ॥ व द म्भ न हि ना या हि स मृ डा
 न क र व ग ॥ मृ डा या स हि ना या हि स क र्थ वा म्भ (अ र व ग ॥ मृ डा च रु वि अ द वि चारु वि र्थ मृ र्ध पि थ ॥ वा म्भ (अ र व य द द वि
 रा व य वृ द्धे य ॥ रु पि थो न र व य द र व ॥ मृ डा प्र वि र्वे य न ॥ मृ डा ध मा दि क ना च न य मृ डा प्र की र्ति ना ॥ अ र्क रू क रू क पि
 रा व य न रु न र व य न ॥ वा म्भ (अ न र व य न्का पि वि म्भ य न्क दा च न ॥ द व रू त्वा य ज द र्व ना द र्व द व म र्धे य न्का पि
 स र्व य र्व स स्मि मा र्थ म र्द थ नि ॥ ग ना ज र्थ य क र्वा ग न स्या सि द्वा र व न्म न ॥ उ व म व म र्द म नि नि वा दी ना क मा र व न ॥ म र्द
 व जी र्म र्द रू स च र्त्त लान मा च न ग ॥ प्र स र्त्त म र्द वि वा म्भ (अ र व य स दा ॥ अ न र्म नि व र्त्ति ग स्या नि व मृ डा दि ॥ अ न र्म
 सु व र्त्त य द वि र्त्त क या दि र्द की र्ति ॥ न क नू या स का य म्भ स च म क प्र की र्ति ॥ वे खान सा दि दी का र्थो य क र्थ वृ व न व च ॥ य
 उ र्द म र्द वा र्थे य क र्थ ॥ अ व य की र्ति ॥ क व र्त्त नि व र्त्त प न्क य द व स्या नि न्क ॥ वी न नि व नि ग दि ना वी ना र्थ वृ व र्त्त ॥ य
 व र्त्त वि र्त्त नि न ॥ स र्व द व य नि न्क ॥ वी न र्व वृ व र्त्त क या य रू गी न ना व रू ॥ च न्द्रा प न ना य म्भ स च र द्वा म र्द थ नि ॥ स

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

४३

यासंक्रमनायसुसो नः पात्रकीर्तिनः । वृक्षभासासकायसुसचत्वार्यं तु वा मगः ॥ इमं च यादिसंयुक्तः सचदोर्गः युक्तीर्तिनः
 वदमता क्रियासवाः वदमता यनासृगा ॥ वदननदिर्गयं नु नु कृयाद्विजः कचित् । वदमार्जनगानिर्णवा ॥ वदमि
 व ॥ वदननदिगायसुसवा ॥ पुकीर्तिनः सुखकर्मयनसुखसर्वकार्यमदभ्यनि ॥ सुधम्मनिनगानिर्णसुखमात्राणिनिः
 विर्ण ॥ सुधम्मनिदेगाविषुसुतदाविदिजाधुमः ॥ गेदुदुगुमदभा निष्ठाजापत्यं समाचन ॥ गदरावमदभानि सचसंजलमा
 विभन ॥ गसासुडादिर्दधवा वृक्षभावज्यसदा ॥ अधमानयदार्थं तु मूडायाका मया गव ॥ सुखसत्यं मदभानि किमनुकु
 मिच्छति ॥ ॥ दववाच ॥ दवमभा तु मिच्छामि विषुसुतदा निवस्य च ॥ ॥ नवउवाच ॥ वेखानसा वददादीनाभा वः
 सुखानथा ॥ गमकृतं मदभानि नथा वृन्दावनं वन ॥ यंचनानुयंचमसा लक्ष्मीवीनवेषुव ॥ नामानदीदनिद्यासीनि
 वीकश्चमदभ्यनि ॥ नगारागवगादविदमरुदायकीर्तिनः ॥ निवसुती गदावेव द्विदिदुलीकमवच ॥ नु कदली मदभानि वीन
 निवसुत्येव च । सप्रपायुयगायाका दमभा वेषुवामग ॥ नववासा नदविमृष्यत्वेन मरुव ॥ दवस्त्रिस्त्रिस्त्रिस्त्रिस्त्रि

॥
 ॥ निसर्वेषुव ॥ वेखानसादिदीकादीरुषिनः ॥ सा विषुव ॥ गानाभा वृत्तं दविमृष्यत्वेन मरुनी ॥ वेषुवाचाननिनगवि
 सुगनुकयात्रगः ॥ अनयचगाभाकासा विषुचिन्दायनायनः ॥ गीनभा वृत्तं दविमृष्यत्वेन मरुनी ॥ नाना रूषणसंपन्न
 नानासोर्गश्चरुषिनः ॥ गवाकृतं पीययिगा कलिदुषुस्त्रयधुक् ॥ नवीनमर्थयाभाश्च निर्वदनकात्रकः ॥ अकंभीकीयना
 दविदविषुवत्रयधुक् ॥ गधवाचाननिनग ॥ लगावचनननयनः ॥ संप्रदायाभाकृतं सवसिद्धिकनाउवि वृन्दावन
 खंदवमिमृष्यत्वेन सोपनी ॥ विगनासायपनासा विषुसुतदा कियनायनः ॥ कामिनीसंगचयसावेन कीर्तिनादधुक् ॥ सो
 ॥ रूषिनननु श्रीधमनेकयनायनः ॥ विषुसात्रयगत्वेन ॥ याका वृन्दावनी निव ॥ यंचनानु मदभानि नथा वृन्दावनं वेषुव ॥ य
 मवमदभानि कीर्तिगायनमभ्यनि ॥ नामकिं निविच्छागा सः निवः यनिकीर्तिनः ॥ गदानदीभा कविहो प्रसन्नासा विव
 धुक् ॥ सर्वसमत्रयनामाननः युक्तीर्तिनः ॥ दनिद्यासंमदभानि यथावदवधनयः ॥ यायसंदात्रभा मका विषुसुतदा
 गन्धियः ॥ यमादिनियमैर्युक्ताकाचानयनायनः ॥ स्वायजागकताग्रहीयनकाययनायनः ॥ दनिद्यासी मदभानि निवम

20

15

10

5

0

CENTIMETERS

अथ ह्ये

निचाननर्जनिचनमृदा प्राकृष्टियमर्किना ॥ सुवन्तु सीदनादविनथाषट्मं रवं निव ॥ अथ सत्यचनार्चवत्तपन
 नैगथा ॥ श्रीगोपीपतिनिर्जवमादगकी श्वनरुथा ॥ षट्मं रवनदस्यं वक्रमादनेपकी लिता ॥ अथ दथक्रमादविविचन
 मदीनिर्ज ॥ अथयानुपगानां चवासनां भूयवावति ॥ निखीयानुपगादविनिखाभुधनशुल ॥ समाधितलनादविसमा
 निवपी ॥ ०५॥ नूडाख्यचनथारुस सिंगनिवारिधनिव ॥ प्रसन्नात्मा भक्तविरुवप्रचोनीयकी लिता ॥ मर्गप्रविन्दमानिन्यासमा
 निखयनिधिर्ग ॥ मृष्टी प्रिगधिर्गदविगानासकृपकानिना ॥ गगनाभुयगाचानसम्यन्नामृष्टिमारुवत ॥ जटीयानुपगादविसा
 यदनविधसूट ॥ प्रिजटकजटाभानीगधवज्जटाधन ॥ नमस्कयस्त्रीर्गगात्मादहक्रमेयनायध ॥ क्रममिगयसयत्राजटी
 यानुपगसमृग ॥ द्विदलीगुमहभानिवाचानादगु संयुग ॥ कायेवाचनसादगु मुदलीपत्रिकी लिता ॥ वीननिवसिद्धागुध
 मवयकानिर्ग ॥ सुवर्कमाहवचुव सांरावादेयुधधन ॥ चतुर्दमीवगानकृष्यदाषवगनगन ॥ अनिषदाषादवमिसदव
 नयनायध ॥ दानिउदहननामवगमनलुकी लिता ॥ कृष्णयकविनयनभुद्रयकृपियावति ॥ अस्मीसपमीसस्मीयकाय

वगमीनिर्ग ॥ दानिकासम ॥ अथयदाषवगमीनिर्ग ॥ नगुगसमायुक्तनिवपूजापनायध ॥ अनिषदाषसंयाधमकृन्समृष्ट
 थिया ॥ अनिवात्रसामवानपूकृचालिमनुयन ॥ आदित्यवासनेदविनासिकामनिर्गचनग ॥ यगादीदीयनदविसवाथयप
 की लिता ॥ द्विगीयादभकादविटगीय ॥ अकसंस्थका ॥ दभकातागगादविसवर्कविनिथाजने ॥ क्रमानीयाथयवनसपूषरु
 तसंयुग ॥ काययजानिम ॥ अथगुनय ॥ अदनसंनिह ॥ अमयनूपतिथगुहसोखरुक्रमलुस ॥ क्रमानीयुजयित्वावनवक्याय
 रुदन ॥ नगुवाचयुयत्ननरुगुहयंरविषक ॥ गुहागुहादिकं कर्मगथाषट्कर्मसाधन ॥ षट्कर्मप्रिविधार्कयथवदव
 अत्रय ॥ व ॥ अकर्मरूपवचविद्वषाच्चाटनं गथा ॥ मानर्गचिदवमि विनृपादस्यसंमर्ग ॥ व ॥ अकर्मनसंमादानमान ॥ अच्चाट
 नं गथा ॥ द्विषणं चमिदवमिषदुर्मा विविना द्रुग ॥ अकिर्लरोवनीकानामान ॥ अच्चाटनं गथा ॥ द्विषणं चमिदवमिषदुर्मा विन
 थक्रमान ॥ यस्याविश्राविधेदवियत्कर्मपत्रिकी लिता ॥ गत्कमादिसमानयषदुर्मा विज्जु ॥ प्रिय ॥ वगसनीयथव ॥ वगस
 लंरनयथ ॥ यथयचदगीयाकावगीकानकुआहवग ॥ आदोयीनिमहभानिमाहनंरुद्वितीयक ॥ वनीकानरुगीयस्यादिगय

प्रितयंतिष्ठ। नृकजागमह। निप्रितयं जायत निव। अनिप्रदाय माप्रितयत्तान। नवविद्विषत। याम्भिसामिमुखं सिर्गनदी
 हीनं पुनागनं॥ चतुनयं चका। नृकनसिर्गदृशत निव। नदकसिर्गमाख्या। नृगुसिद्धीननृमा॥ उदयं नृप्रितयं वा य
 दृवर्द्धनमवच। अगलियगाकानवा। श्री। ससकमवच॥ द्वादश। सत्वयुग। इदं यं प्रकीर्तितं। निवविष्णु निपत्रमथः
 नि॥ अनिप्रदाय भृत्वा। निर्वपुष्पयत्तग॥ हे जयद्रु। नृकानदकिभूको। दिदमीनिर्ग॥ अपनीयं नदस्य च किमन्यकुतः
 मिकुसि॥ ॥ नृमिती। नृसिर्गमगनुनाजं। नृका। यगा। नासेवायुधमख॥ युदाय विधिन्नामा सुम॥ यदत॥ श्री॥
 पीदयुवाव॥ दवम। नृमि। नृकामि नदस्या। नि नदस्यकं॥ पूजादेयं महादवसं युदाय यवद॥ ॥ निवउवाच॥ षट्दर्शनं
 षण्मायमहाविद्या विष्णो निव। यं वायननकदविनिवमकीयुनयिव॥ अथ। गयात नृदनी गलन। नृकनागमा। दयगीवा
 नामचतुकातकाती महयवि॥ गानागलपनि। नृवगा। नावदृकनवव। अथककुमया। गन द्विभरुदं प्रकीर्तितं॥ नृगमासु
 दनीया। मयुनं नृमहयवि। मृतयुनं मृदयुनं गविन्को महयवि॥ दवयुनं सानकं उवाच यदमानस॥ विद्यायुनो यथयु
 य

आदवयुनं यवापुन॥ पूजनीयामह। नि। गयात सुन्दनीयना। पूजाकानां समकानां पूजायुनं प्रकीर्तितं॥ नृमवतुसर्वेषां क
 थिर्गुनृगीयकं। अथोयश्च नृदविगद्युनं युजयद्वर्ग॥ नृकानि वमकुवायस्यवाज्ञानेन वनं। नृस्ययुनं पूजयकु सैकपा
 ददिर्गमया॥ विनृपा नृमनमानं युनं युनं सैसिखनं। सुन्दनी नृववीदवीतल्येवकात सुन्दनी॥ सुन्दनी कान्तेयुनः सुन्दनीः
 नृपल्लयपि। नृमिर्गयनः प्राकं डवर्द्धनं नृप्रिय॥ कनतल्येवका। नृनं नृमोठल्येव नृगीयक॥ निवमकी गदयत्तं सयुय
 र्थाय रुदग॥ चतुनागी नृयुनननाधिति नयमाश्रित॥ अथकयुनं नृववटवा सिकमवच॥ दन विद्यायुनं नृदवाइत्य
 मीनिर्ग। इधं वृगककं दविमृननं नृगीयक॥ इधसानः कूमा नीचयं वगलानि वैयगु॥ अथ विद्या निवाख्यानि सर्वपूजके
 मवच॥ का। नृनं नृकल्येवगा मगयं युदाययनं। विद्याकं नृद्विगीयं वगुं जनेन नृगीयकं॥ चतुर्थयाय सै इधयं वसै मिथुनैः
 रुवन्। यंचानृकल्येववमिका। नृनाखकुममगा॥ मयमासिर्गमस्य मृदामेधने मवच। मकानाः यंचवेख्याना। नृमोठमाश्रित
 दयवि॥ सामान्यत्वेन कथिर्ग विनृषं नृसादनी। इधानृकल्यमयं युजययथकुमान्॥ इधनकनतयुजाका। नृनं नृ

20

15

४२

उद्धात्रायादिसंयुक्ता द्वितीया यः पत्रिकी हि तः॥ पूर्वो लिखक नदिन स्त्रावायुर्लंकनानियम तस्य नाग कनिष्ठा मिथ्या गिनी
 गधरुषितः॥ पूर्वो लिखक नदिनः मन्त्रसंसाधनं नदि। प्रमादात्मादनादं लालस्ययागं हविष्यमि॥ इहिकं नासु रं गं वृथी
 र्क्यादिकं निवृत्तिं जित्वा मिवागं सत्तगावाभनं द्रुमगं हवन्॥ प्रवर्षयं च मासं सुधुं मुकुरु हविष्यमि। प्रवृत्तीनां मरिचाद्य
 यतानीयं च विममि॥ अदिकं ललनां दयाद विकुरु लुहर्न। घटकुरु लनां दवितनं च वधजां हविष्यमावर्षमागं दवनिम
 कुरु च विनश्चमि। वदवाच्याय धाद विद्विजवायु लुधनन॥ कुरु वहा हवत्सा विषाय विरुन पुष्टमि। तस्य संसर्गमात्रं न प्रीः
 र्जनश्चमि निश्चिर्न॥ दीक्षिता यमुकुरु न तस्य सारं गृह्यथ। अग्निमाद्यं कुरु द विना कृद्धिः क्रमत्रयगा॥ वृष्टी सिद्धी च नाहत्वा
 निवृत्त्या नना हवन्। सदा अध्वन्या गायि पत्रा सवदवगा॥ यंचा ग्रीवा दभं अत्रु विमर्षं गृह्यं सारवी। आदोदु कर्णक
 यं नगावादी कर्ण हवन्॥ स्य नदी का गत क्षा का गता वेधु मयी हवन्। न नक्षिया वृती रूया गतः कलावगी हवन्॥ आधवी तु गत
 रूया गतः षड्दग्नी हवन्। यंचा यग नदी का स्यात्तु ग्रीयं चर्प चका॥ गतः पूर्वो लिखक स्यान्वृषणा माय कुमवच। एवमधक

10

5

संयुक्ता निवृत्तवनसंययः। यंचा यग नयय कं वा दभं अत्रिना गं यग या सका यच यंचा यग नदी दिना॥ गेः कार्यः
 साधनं दविर्वा ग्री मय संरुको। एकाग्र नयिन द्रा मिधु मयानं मद्रुवनि। जला को भविता सादिगेः कार्यय नमश्चि। गं यग
 मयि संकार्यं गुया खोया मद्रुवनि॥ नान्यं कार्यं दव निमन्त्र संसाधनं निव। नदस्या गिन दस्यं वकथनं वा न्यदवदि॥ नासं गत
 काम कर्तुं य संन्यस नं निव। तथा मिमनो दव प्रचा कना सायनं निव॥ यथा काम कलाधने मं कना सा पनं गथा यथा सनादि
 संयुद्धि लव द्वा मुपयुज नं॥ गुरु कृत्वा मद्रु मी नि वाधिका नी हव द्दुर्व। वाचु विनायः कुरु न मस्य नां हविष्यमि॥ ॥ यंचा व
 ॥ अथ वे सव मन्त्रं र्कं र्कं वद मद्रु न॥ ॥ निवृत्तवाच॥ न्यास मना र्कं र्कं दवि दद सिद्धादि कं निव॥ यकु म ना र्कं र्कं द वि
 सा क विजयादि कं। अग्नि मना र्कं र्कं द वि कथनं गृह्यं सार्पं॥ प्रोक्तं वगं का निर्वं ता कसे माद नं निव। दृष्टं र्कं निरु द र्कं व सो
 त्य र्कं य नमश्चि॥ वृद्धि या नां संय म नम मि स वना हवन्। अग्नि स वना द वि दानि द द र्कं हवन्॥ वेना र्कं र्कं वा कुरु र्कं
 विन जी व त्व मा प्रयात्। ययं काम यग कामं गुरु द्रा मि निश्चि॥ नाना वम लान कनः सर्व ता कष प्रजितः। अग्ने र्कं र्कं

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

20

15

५३

10

नीतवर्षवाकृत्वासिद्धीश्वराख्यम् ॥ षड्यानायधमासायसर्वसिद्धीश्वराख्यम् ॥ त्रिमासकपावयाकाधिकगगीतम् ॥
 समस्तसिद्धयादविमल्ययादगताख्यम् ॥ नदस्यामिनदस्यैवमयनीयस्वयानिवम् ॥ सायनाकाइइतिविलक्षणम् ॥
 यागनशानककुरुवसापिधनदशकैकनागुदे ॥ कृतिर्नयनध्याकैकिमन्यकोडुमिदुमि ॥ ॥ **ॐ नमो भगवते**
समस्तगानासंवादमहिसंगमननुनाजसिद्धिमननदस्यमनूकथनदममयटतः ॥ ॥ दशुवाच ॥ दवम् ॥
 तुमिदमिनदस्यामिनदस्यैव ॥ **॥ निवडावाच ॥** नदस्यैवमनदविमृष्टसावादिगारुव ॥ दसाकात्रासिद्धीश्वराख्यम् ॥
 कानयलिय ॥ किंवाजीचकुवत्कार्यनक्षत्रमृष्टयावृति ॥ चत्वनानववेकायपिधमविनुसंगमः ॥ नमस्कोलकुरुम
 स्ताननदनकन ॥ ननादमनदेवमिद्वितीयवदमनक ॥ मत्वम्वनगकायननानागदसंनिध ॥ षाठमार्थदत्तद
 विनगावृत्तयुखवगाचुद्वानीयलागार्थजीचकुमनूयक ॥ कमा माइतुनकुत्वाविनवयत्तुधी ॥ ननायनि
 मरुमानिसंयुयनवयेतग ॥ नवकुभानिजायकउवकुमन ॥ निवागताजीचवपुकात्यसुदनीधनपूर्वक ॥ नदाय

5

धमिदुमाशुमनूजीयवतामूर्त्त ॥ महामनूनयदविदसाकारुकायन ॥ निसुप्रसुदसाकारुकीर्तिगायनमश्वि ॥
 नर्वकनागियादविसर्वसिद्धीश्वराख्यम् ॥ सपुर्णिमज्ज्वनानुहिकमाक्रमगेगाचयेन ॥ सुखिसंहानमार्गलकातचकुद्विध
 रवम् ॥ सुखिसंहानमार्गलमुख्यमरुवयोगि ॥ चतुद्विधनिगदिनकातचकुसमावेन ॥ ननायनिमरुमानिजीविद्या
 चकुमहर्ष ॥ यनाचकुनगादविननःषटमरुवाहिध ॥ चतुद्विधनिगदिनसंवर्तमकुममृष्ट ॥ चत्वनपून्वाकारुकासा
 वाइमिनीमवा ॥ उरुनारुनगाचत्त किंवायुनूषसंहति ॥ षटयवागदवदादोनवकुकुममव ॥ द्वितीयगुद्विपवाभवा
 षष्ठीकुगगीयक ॥ यवागदवपुमिगाचतुधेपेनमश्वि ॥ द्विसपुर्णियवमहचतुःषष्टिमुषटकुम ॥ निवाविनुर्महम
 निसंवर्तसंपुजयम् ॥ अथवायुपुनिलकुममन्यमृष्टपिया ॥ सपुर्णियाचत्वनानिकृत्वायत्नेनपार्थि ॥ नवकुभानि
 दवमिनवयकुमनगमिव ॥ आदोविनुर्महमिद्वितीयवक्रिकुधुकी ॥ नगीयचत्वनदविनसंख्यानिकानयम् ॥ चतु
 र्थवसंख्यानिकतासंख्यानिवपिया ॥ षष्ठद्विनिमिनिवर्धमकुभानिसपुर्मा ॥ चतुर्धुमिदवमिवसंख्यालिधरव

20

15

10

5

0

CENTIMETERS

२३

विज्ञानीया त्रायकाया विज्ञाना। प्रकृतं निखिता मनुजयज्ञाय न सिद्धिदा ॥ तस्य दर्शनमात्रं मनुका रविनाभन
 ॥ मुक्ताजगति दवनि प्रदीपाय न स्य च ॥ जस्यैव सुखं अथा हि महाकवि वना रवण ॥ सिद्धमनु प्रना कृता गानायापः
 नमश्च नि ॥ यदा हस्तं यदा दद्यात्तदा घटस्तत्त्वमी ॥ सर्ववदं गिदव निप्रदं दयमवच ॥ न गथा गुरुत्वा कृतवपीणा
 महश्च नि ॥ गावि वाची कंद विविमय कृतु मिच्छु सि ॥ **॥ दशवाच ॥** दवम ॥ मित्वा मिप्रवर्कं यदुदस्य कं ॥
नववाच ॥ नदस्य गिनदस्य च गवपीणा निगद्यते ॥ महापदि महाधा नया प्रपाथ स्य संकट ॥ नाश्रुता नो दृष्टनाभः
 सगना लसमा गते ॥ महामानी रयया फेना सुखं गमदश्च नि ॥ नाश्रु न कलया गचिय न नाश्रु विनाभन ॥ महापी नि कृत
 या गंषट्क मसा धनीय न ॥ गलध्वन मसमानि मृत्सावदिगारव ॥ **॥ नववाच ॥** आदीय वा कनी गाना कृतु का स
 दिना जय ग ॥ अधिष्ठात्री चतुष्टयं कूर्ववी जा कया पना ॥ कात्या ॥ कीले वनि वना नावीर्जं नदवतु ॥ गाना प्रववेनामा
 ख्यं नदवये नि कीर्ति ॥ विना च का कनी मनु सप्रवय नि कीर्ति ॥ एकस्मिन् गिनयं दवि महाका क्षरि धनः ॥ चतुः वि

गीः

यात्र यथैव कूर्ववी जा कयं निवो चतुष्टयं निविख्या ना कूर्ववी जा कया रवण ॥ कवसं यस्य जायते प्रि मकी जय हा गुरुव
 ॥ पूर्ववीर्जं यनं मकि नैर्त्यं कीलक मूद्यन ॥ यथ प्रत्यामदं भा नि प्रम की दव गो मना ॥ कासी वीर्जं नथ गाना द्विना च का क
 नी गथा ॥ अकनी यन मा विद्या जे सा क विजया रिभा ॥ गाना का सी नथ द्विना गाना द्विना च का तिका ॥ कासी द्विना गथ गाना
 द्विना का सी च ना विधी ॥ द्विना गाना का तिका च षड् द विजया कता मकु प्रवण सु सु सु ता कना कदा यिनी दव गाना
 निनी प्रुवा प्रि मिदवी र्घटिका ॥ अधिदवी उ विजया अकनी यन मा कता ॥ यदी जमा दी दव नि नदवा यु प्र हस ॥ मध्वीः
 जंस्त्रयं स्या दं पवीर्जं वारुन ॥ नवा कनी यन विद्या न दाम्भा मरु च नि ॥ प्रि गाना प्रि महाना प्रि मक मरु मी तिन
 जे सा क विजया विद्या सु गम प्र वन पुदा ॥ जे सा क विजया सुखं नदव य नि कीर्ति ॥ यदी जमा दी दव नि नदव मकु मी तिन ॥
 अथ वा यत्र कृत्वा लंघी ० प्रुर्जनं निव ॥ जगत्तया गदव नि द्विना वान ॥ यु की र्ति न ॥ संहाना मु मरु भा निवा लंघय नि
 कीर्ति ॥ निव चार्ध पटी विद्या उ च वत्रा गुजी वहा ॥ अरु र प्रवका र्त्तु वा क कथनी रवण ॥ जे सा क वा क कथनी मरुः

20

15

१२

ददव ॥ ददव ॥ अमुमिहामिदीननायादिनिर्घय ॥ ॥ निवउवाव ॥ वीननागीमहानगीकातनागीरुथेवव ॥ माह
 नागीमाननागीकाधनागीरुथेवव ॥ नथेववावतानागीकातनागीरुथेवव ॥ निवनागिदिगनागीदानाचयधकमा
 नाकधनपनम ॥ निभृसावदिगारुव ॥ चहुदमीसंकुमपुक्तकृतवासरु ॥ अर्द्धनागीयथाया ॥ निवीननागीपुकी
 हिना ॥ अकाशमीवाधिनस्यनवनपुनस्यवधमहानगीमहाननिकातनागीपुकी ॥ दीयासवचहुद ॥ अतय
 मायागजवच ॥ कातनागिमेह ॥ निगानाकातीधिर्यकनी ॥ जमाशुमीमहाननिमाहनागीपुकीहिना ॥ कृष्णवगानययम
 नानाया ॥ अयकीनिने ॥ जानकृष्णवगाननुनिमृकागानिनीपना ॥ उत्तलीविस्थवानियाविशुद्वयसमागन ॥ श्रीमहा
 नागिनीविशमहानध्वनयना ॥ अमनधवस ॥ सिद्धासुनियुष्टिकनीयना ॥ चहुमानीनवम्यावे ॥ अकृष्णवचरुसग ॥ अ
 धनागीमहाननिकातनागीरुविशनि ॥ मामिनामिनिनयाफकृष्णमहाननि ॥ महाकातसुत्रयावधाननागीपु
 कीहिना ॥ याफरुनुपकमासंकृष्णकादनिकाहया ॥ तयुलोमयूगवत्यादवतानागिनीनिना ॥ अक्षीयादममीपुद्धार

श्रीः००

10

5

गुवासनसंयुगा ॥ दगयागसमायुक्तानागावकादनीयदि ॥ साविथिदिगनागिधकीहिगापनमवनि ॥ अक्षीयादममी
 पुद्धारदमयोगसमन्विता ॥ वट्टकत्यमिथिधकावट्टकायहिनागिनी ॥ अमालीमसमायुक्तसंकुमनसमन्विता ॥ कृतवृत्त
 समायुक्तागुहलयदिचहुवत ॥ गानागिधुसंघाकारायादवउत्तयन ॥ कानुपेकृष्णयकेहुमृद्वेनो ॥ अमिने ॥ नि
 वनागिधुसंघागासहसिद्धिपदोपिनी ॥ अमालीमसमायुक्ताहयगुहलयययदि ॥ अपनाइयदायागमृगसंघीविनीमिथि
 ॥ खानदानादिहामाकमनकुरुतदंरुवत ॥ अक्षमीचहुमासीयासंकुमनसमन्विता ॥ अक्षनागीमिथिगानानाकाती
 समोकती ॥ रनीयामाधवमुद्धारकृतवानकेसंयुगा ॥ दानुकाकीहिनादविमृद्वेसिद्धिनीपना ॥ कमलकथिमेसर्वयधनाजा
 हिधमृद्वे ॥ रनीयापोरुमासीयाहगुवासनसंयुगा ॥ साविथिकनाकाकृतनकुरुसंयुगा ॥ चहुधीसादिगावत्याद
 वगीसादिगाकविन ॥ पर्वनागारुधयवृत्तसर्वयधमाम ॥ रनीयाचहुमासीयानवनीसंयुगायदि ॥ अक्षीया ॥ अमहाननि
 हासकमनिसत्यन ॥ यमिमासंघीरुमासीमासनकुरुसंयुगा ॥ कृतवानसमायुक्तासाविथिसुन्दनीरुवत ॥ अक्षमीपुमिना

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

८०

ससंकुषुपकस्ययावति। होमयुक्ता तथा ऋकयुक्ता वाक्वसा च वा ॥ दवीना जीविनिखाना सर्वसिद्धी प्रदायिनी। चतुर्थी स
 यमासस्य भननाया एव ग्रहि ॥ गणयना प्रितिनिखाना नि उवः। नवमी कषुपकस्य कलजक समन्विता ॥ वानयुक्ता
 धवादवि सिद्धिना जीवकीर्तिना। चतुर्थी कषुपकचक्रनवानकसंयुता ॥ कवसंलोमयुक्ता वा वानः नवी स संकुम। अमाली
 मसमायुक्ता कलकसंयुता यदि ॥ कृष्णा ग्रीविनिखाना अकायपीनिका निनी। अमाली अवलया नयुक्ता च नवी पमायुथ
 ॥ अर्द्धादयस विरूय किं विलूना महा दयध धर्मना ग्रीमहमनिकीर्तिनय सुनर्षि ॥ अमाली मवसा मवसुभसदिनाया श्रीः
 वा। युनूना नविभद विरूतलक समन्विता ॥ दिवमाधु सिकाया गसूर्यपेव भगा विक्रमाद्यमासु कृपकस्य मीयायकी
 हिना ॥ सो निमिथि सुसायोज पदामादिकं चनन। नवियुक्ता कलकसंयुता सनधपिसंयुता ॥ महासी ग्रीविनिखाना येना
 खात्यमोहका। सपुमीयमिमासस्य नवियुक्ता यदा एवम् ॥ दंसी निमिथि सुविरूया माकधर्मयनायथा। वृक्षा मीमहमनि
 यमिमासस्यया एवम् ॥ विष्णुना ग्रीविनिखाना लाडमास विभषण ॥ माद्यमासु कृपकस्य चम्या रुडवासन ॥ वसनपचम

प्राक्का कामसंजीविनी निमिथि। आना प्रिकं जयादा माकीर्तिन कामरुन ॥ अवलया रूमास्या तु नटु कयन मध्वि। यविना
 नायनं कार्य नेकादिभ विभं चनन ॥ यो विमा रूमासीया गस्या दमनयुजनी। यमिदिद्य विष्मिद विष्मिदया। गुपयुज
 न ॥ एतया गयुजना द्वि सिद्धि विन्दे निर्दिष्ट नथ रूमिसे कयन ॥ या कं किमन्युवा तुमिदुमि ॥ ॥ रूमिदी मद काय
 महायना नासंवाद भक्ति सगम नु गुया दभयवटन ॥ ॥ दयवाच ॥ दयदव महादव सर्वेषां सुखवदुन
 कनसिद्धि ददोषा गुनानुता अना निनी ॥ श्रीमहादकिना कासी सिद्धिकन पुनरुमि। नमवद महादवयशद नव
 वसुता ॥ निवउवाच ॥ नरेत्यामि नदस्य वकथं त्वयिनिवयता। नयर्थं कृनुदवानि नदिनल वदाम्यहं ॥ नयत्तु नरेभः
 सविसेवम विमुखी एवम् ॥ नयथ नपुदुका स्मिकथं नृशसंयुता। सिद्धिर्मधुमती नामा प्राशुता नदारूया ॥ कासी नाना
 मयभम नसकासा दह द्विवा। श्रीविद्याया मुखदलं कात्याकनयुगं निव ॥ नानाया वांस्तिदला उवन् आदुदवृज। निनाया
 चननददं मोर्गमनयेनदय ॥ सक्ता नतादं दलं वगयेव सिद्धि विद्यया। कर्मादहमहमनि उत्यो वक्रा स्वदिशह ॥ हा स

20

15

४२

मिहठ नः साधकस्य यथेष्टिर्न ॥ मिहठ नः साधकस्य यथेष्टिर्न ॥ आकर्षयत्युनिधममनां चिदमनां ॥
 (यागानादिना साधकस्य हसग्रीमि सत्तुता ॥ अतस्मान्निववत्तु निद्रनाइमी गता दाय ॥ नदीप्रीचन ज्ञानिसमाक
 षमिगत्तु ॥ वृहन्नैव पून हानानां च कथयत्ययि ॥ नदस्य विद्विषायायि सत्यं सत्यं नमावि ॥ मिमाकाकष
 णी विद्या नव स्या पत्यकस्य सित ॥ वट्टकमं गृहान त्वं सिद्धिदा इत्युसर्वदा ॥ वृमिसैक्यनः ४ प्राक् मनु रदो च साधनं ॥
 ॥ वृमिनी मक्षि सैगमन कुनाइ युधमख (पुता नाकात्यं ग सिद्धिपटल ॥ ॥ दशुवाच ॥ दवन ॥
 दुमिद्रामिमना नन्यां साधनं ॥ ॥ निवडवाच ॥ नकाकनी वाद्य वीगा टयुग्मा अकनी रुवग ॥ टही नासा हया
 यूक्ता अकनी काम पूजिता ॥ वीजसंवाधन युगा टद्वयं गामुनिधिया ॥ वीजसंवाधन युगा स्वा हो गामुनिधिया ॥ स
 वाधन टयुग्मा गामुनिधिया ॥ सवाधन टयुग्मा गामुनिधिया ॥ सवाधन टयुग्मा गामुनिधिया ॥ सवाधन टयुग्मा गामुनिधिया ॥
 विश्वरूपिणी ॥ कमाया टद्वयकाच नडा धूपनमस्थि ॥ कमाया वक्रिजाया ग विद्याया यनिकी हिता ॥ वीजकमः

५१००

३ वीजसंवाधन युगा

10

5

टद्वयं गामुनिधिया ॥ वीजकमः गगः स्वाहा सिद्ध विद्याय कीर्तिना ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा
 ॥ वीजसंवाधन पदं कमाटद्वयसंयुता ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा
 नायना ॥ वीजसंवाधन पदं कमाटद्वयसंयुता ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा
 हा विद्या सर्वरूपसूचनी ॥ संवाधन गगः कमाटद्वयसंयुता ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा
 नगगः कमाकाच यना कसा ॥ वीजसंवाधन पदं कमाटद्वयसंयुता ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा
 निधिसिद्धिरुदेहिना प्ररुदायाय कीर्तिना ॥ नदीप्रीचन ज्ञानिसमाक ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा
 निधिसिद्धिरुदेहिना प्ररुदायाय कीर्तिना ॥ नदीप्रीचन ज्ञानिसमाक ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा
 वाद्यपुष्टिनिवाचनं ॥ नदीप्रीचन ज्ञानिसमाक ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा
 माधन कमाकाच यना कसा ॥ नदीप्रीचन ज्ञानिसमाक ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा ॥ वीजसंवाधन पदं कमाकाच यना कसा

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

20

15

10

5

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

रुदवाह्यमीति ॥ विद्यानाम्नादिना विद्वन्महाविष्णुना । वन्द्यवर्द्धनसा नरकस्थामा चर्या उनीतथा ॥ यनावा
टासुदनी नदनी नायना नवनी । दीपिनी मातिनी कनो कमादिद्यादिना चर्या ॥ वगताया महानि सामाग्र्या नमस्ति
ता । वन्द्यवदसु मन्मनुही न निर्वाननी ॥ इदयं वगता पूर्वपचाकुरुकुरुका तथा । मयगी कमया नन सामाग्र्या न
महिधुद ॥ एतत्तु चरसंयुक्त सर्वसाग्र्या वृद्धिभुक्त । दीपिनी सर्वसाग्र्या दीक्षा सवर्द्धनारुवत ॥ तनापि दीक्षा देवजिनाः
हिवमो ग्लान्तका । दमविद्यायुहदा वमहाविद्यायुहदजा ॥ सिद्धविद्यायुहदा वमहामनुकालेवरा । नदंगमका देवजिनी ॥
मवनंदममवनरी ॥ कातमवनकंदविनयेव सिद्धिमावनरी । प्रकादर्शनमनुकालेवरा । नदंगमका देवजिनी ॥
खने वृद्धिमायाकतोमिव । तथायननमका च यकि विमनुकातकं ॥ सवर्द्धिका नदवजिनगदीक्षा विष्णुवत । नगदी
क्षासमायुक्त साक्षात्कीर्तिका स्वयं । युहनाष्टकमवेव दमविद्या स्वयं यदुक्त । कामकलाहि विद्यायुहदा वृद्धिदेवता ॥
गमनुकालेवरा । नदंगमका । मयगी कुरुकुरुका चर्या मिव ।

[illegible]

20

15 ६६

10

पानप्रतीतिगहा सा द्युधिगुयंद विवृक्तं धीप्रकीर्तिना ॥ चद्रुगंधी मरुभानि सुगानां गंधिसंख्या ॥ यदुत्तमसूत्रनिय ॥
 संप्रनोद्यपिनाहिव ॥ संप्रहृष्टमय यदुत्तमसूत्रं गंधिप्रीतिना ॥ गंधिकुलो मरुभानि युजयद्गंधिद्वर्गा ॥ सुगंधवेषु य
 कं लोचयदुत्तमसूत्रं ॥ संप्रजानक मरुभानि लुहया कुरु सर्वग ॥ पंचसिद्धी विष्णोदविन त्रयाय निधीहिना ॥ वृद्धं प्रीति
 वं द्रुविषयदुत्तमसूत्रं ॥ दत्ताष्टकं च वस्त्रानंदनं नरुत्तमानकं ॥ दत्ताष्टकं च वस्त्रानंदनं नरुत्तमानकं ॥ दत्ताष्टकं च वस्त्रानंदनं नरुत्तमानकं ॥
 सा नृवाय कान्धकाशिकानयन ॥ मरुभानि युजयद्गंधिप्रीतिना ॥ अनयत्यनमं भानि यद्विग्नन कृष्णमाकं ॥ सा नृवाय कान्धकाशिकानयन ॥
 दोहृत्तमानं यदुत्तमसूत्रं ॥ उरुमादिक मरुभानि वेकानयत्यनमं भानि ॥ मानि र्गंधनं नरुत्तमानं ॥ विन्दमसि हृत्तमानं ॥
 नरुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥
 विन्दमसि हृत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥
 वृत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥
 वृत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥

१०००

5

मत्तायां च कानयन ॥ चद्रुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ चद्रुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ चद्रुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ चद्रुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥
 काश्चानि तथ विद्या कानयन ॥ विसिखत्यनमं भानि वीजमार्गं च वासिखन ॥ र्वयं लोहायथायुक्ता समाचरन् ॥ यदा केव
 प्रमिसुखं त्वं पविष्टं न वापिय ॥ अपरं दानकं भानि सुत्तमानं विद्या कानयन ॥ नरुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ वृत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥
 मुखे च नरुत्तमानं ॥ मत्तायां च कानयन ॥ मत्तायां च कानयन ॥ मत्तायां च कानयन ॥ मत्तायां च कानयन ॥ मत्तायां च कानयन ॥
 ॥ संप्रनोद्यपिनाहिव ॥ संप्रहृष्टमय यदुत्तमसूत्रं ॥ गंधिकुलो मरुभानि युजयद्गंधिद्वर्गा ॥ सुगंधवेषु य
 कं लोचयदुत्तमसूत्रं ॥ संप्रजानक मरुभानि लुहया कुरु सर्वग ॥ पंचसिद्धी विष्णोदविन त्रयाय निधीहिना ॥ वृद्धं प्रीति
 वं द्रुविषयदुत्तमसूत्रं ॥ दत्ताष्टकं च वस्त्रानंदनं नरुत्तमानकं ॥ दत्ताष्टकं च वस्त्रानंदनं नरुत्तमानकं ॥ दत्ताष्टकं च वस्त्रानंदनं नरुत्तमानकं ॥
 सा नृवाय कान्धकाशिकानयन ॥ मरुभानि युजयद्गंधिप्रीतिना ॥ अनयत्यनमं भानि यद्विग्नन कृष्णमाकं ॥ सा नृवाय कान्धकाशिकानयन ॥
 दोहृत्तमानं यदुत्तमसूत्रं ॥ उरुमादिक मरुभानि वेकानयत्यनमं भानि ॥ मानि र्गंधनं नरुत्तमानं ॥ विन्दमसि हृत्तमानं ॥
 नरुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥
 विन्दमसि हृत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥
 वृत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥ यदुत्तमानं च द्रुत्तमानं ॥

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

20

15

10

८६
 मम (ध) दवानि विना न कियथा धर्मः ॥ ब्रह्मविदुः या जागान काही नाना विषयः न कावचन मण्डप मास दान न क
 धी ॥ अरुण दव दव मिमि गृहान ना रवण ॥ वर्ष माण कृता न कावचन याग न ॥ अरुण दव वीर्य कि न धिया धर्मि ॥
 अरु वीर्यः पना कायः सर्व न कर्ष वन ॥ वद सत्कान वग रा पा कर्म यु की र्ति ॥ गृहीत वेद मन्त्र सन कर्ष यु पि
 उक्त ॥ नद विष्ठा एन कर्ष न कावचन मी विन ॥ गम्मा सव यत्न न कावचन मा चन ॥ विना न कर्मि ह मी निवर्ष माण
 कृता क्रिया ॥ सक तानि रुता द वि दव ना विमृता र वन ॥ सर्व स्वे न पि दवानि न कावचन मा चन ॥ सर्व न काय दा द विर
 वय वन स न ये ॥ निर्य न मि लि क का र्थ क मा णि न ये मी नि गी ॥ निर्य स न य नः प्रा क कि म न्य क्ता उ मि क्ति ॥ ॥ द श वा च
 द व न ॥ ॥ मि क्ति मि क्ति मि न ह य मि न ह य क् ॥ ॥ नि व ड वा च ॥ कि न ड ह य द व मि न ड ह य वि र्य व द ॥ ॥ द श वा च ॥ प वि ण
 ना य र्ण क र्म द म ना ना य र्ण न था ॥ क थ ना द व द व न य द ह न व व न ॥ ॥ नि व ड वा च ॥ आ र्वा ड उ ह मा मा स न व ॥
 म ध म स न ॥ ही ना रा ड य दा मा स य को नि न मि न न ॥ पु स स न क य क सु न द रा व य न स न ॥ य व मी वा क् मी च व न व मी

5

२ लो ॥ ४
 दम मी मि ॥ द्वा द श च व रु द्वा यो र्मा स्या म था पि वा ॥ पट रु र्ण वि मि र्ण का र्थ स र्ज नि र्ण न था ॥ पि रु र्ण पि रु र्ण क
 ल य का म त वा नि ॥ प वि मा स्या क म रु ति दि नि नि सा य रु न ॥ मृ न थ प वि ण मि न ना नि का न य न ॥ अरु न न
 न ॥ अरु म ध म र्ण न द क् ॥ न द क् च क नि र्ण य्वा य्वा न क्ता उ पु र्व व न ॥ पू र्वा क् र्ण न रु द न ड रु द न वा पि थ ॥ कृ ता य
 वि र्य व न र्ण यि द वा वि न न ॥ उ रु ना स्या दि न म रु द न ग्नि मु क्त न ये ॥ वि र्ण वि र्ण स र्ण क् र्ण मा दि र्ण दि र्ण
 य दि र्ण ना न दि व स पु र्व धू न पि वा स न ॥ स था पि वा स न वा पि क्ता रु य न मे र्ण वि ॥ ना णि स म पि र्ण सा क् नि र्ण पू र्णा म न
 क् र्ण ॥ उ र्ण सि हा स न मे र्णः स र्ण वा रु वा म न ॥ पा थ यि वा रु व र्ण र्ण कृ ता न का व ड ॥ द न का र्ण न था ग्नि र्ण स र्ण
 च न मृ र्ण ॥ सि र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण ॥ न क् र्ण स म र्ण स र्ण र्ण र्ण ॥ पू र्वा दि दि र्ण क म य वि र्ण र्ण र्ण र्ण ॥
 अरु र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण ॥ र्ण क न सा म र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण ॥ स र्णः स दा नि वः स र्ण दि वे ना स र्ण वा
 म ना ॥ स र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण ॥ कृ ता च यो र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण ॥ वि र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण ॥ वि र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण र्ण

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

15 शेर

निव॥ मना न्ययी च न वसी दमसी सर्वगाम्खी । यत्किंलादवगायुषा नृपवाने कतात्मके ॥ मूलमनुनवा मन्त्रा यविप्रवृ
कतायजन् । निष्ठायाठ गदवनिजी विग्रविस्मनत्रिये ॥ अस्तीगानावाहवाणी कतास्मानप्रयुज्येगा । कात्याकात्यादिनिय
श्वयुज्येनमन्त्रे ॥ अधिवा सविधिष्या कृपेक्षादानाधनं हवन् । निष्ठावर्नानर्गनेनेमिहिकमिदं हवन् ॥ समस्तयः य
विश्विकच्यकायः सहाजन । सुउर्पूज्येयस्वद्विस्तकान्मधने ॥ यथा गच्छानमस्तु पदेवी नृपमविकथन् । आना
ययत्यविर्गवविहसाय विवर्जित ॥ यन्ः संपूज्येयुग गल्लुनं रुसावर्द । सवन्नपूज्येयुग क्रियासा निरुसासेदा ॥ उ
नानरावंगत्तुर्पूजा रावंगदंगता । तदरावंगत्तुर्पूजा रावंगदंगता ॥ सवन्नपूज्येयुग क्रियासा निरुसासेदा ॥ उ
जयदी निर्गयुगत्तुर्पूजा रावंगदंगता । तदरावंगत्तुर्पूजा रावंगदंगता ॥ सवन्नपूज्येयुग क्रियासा निरुसासेदा ॥ उ
क ॥ वक्रमत्येयुगत्तुर्पूजा रावंगदंगता । तदरावंगत्तुर्पूजा रावंगदंगता ॥ सवन्नपूज्येयुग क्रियासा निरुसासेदा ॥ उ
कुमिहसि ॥ ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥

श्री १००

5

कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥
नाकृष्णविग्रमममर्शनवात्यर्थतयायुगत्तुर्पूजा रावंगदंगता । तदरावंगत्तुर्पूजा रावंगदंगता ॥ सवन्नपूज्येयुग क्रियासा निरुसासेदा ॥ उ
मयाया ॥ मना न्ययी च न वसी दमसी सर्वगाम्खी । यत्किंलादवगायुषा नृपवाने कतात्मके ॥ मूलमनुनवा मन्त्रा यविप्रवृ
सिद्धिमीयुगत्तुर्पूजा रावंगदंगता । तदरावंगत्तुर्पूजा रावंगदंगता ॥ सवन्नपूज्येयुग क्रियासा निरुसासेदा ॥ उ
वा । पुथुगत्तुर्पूजा रावंगदंगता । तदरावंगत्तुर्पूजा रावंगदंगता ॥ सवन्नपूज्येयुग क्रियासा निरुसासेदा ॥ उ
श्वदवन् ॥ यदीनसि वीमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥ कुमिहसि ॥
वासा ॥ मना न्ययी च न वसी दमसी सर्वगाम्खी । यत्किंलादवगायुषा नृपवाने कतात्मके ॥ मूलमनुनवा मन्त्रा यविप्रवृ
गत्तुर्पूजा रावंगदंगता । तदरावंगत्तुर्पूजा रावंगदंगता ॥ सवन्नपूज्येयुग क्रियासा निरुसासेदा ॥ उ
विग्रमासीनयेव ॥ मना न्ययी च न वसी दमसी सर्वगाम्खी । यत्किंलादवगायुषा नृपवाने कतात्मके ॥ मूलमनुनवा मन्त्रा यविप्रवृ

20

15 १०

10

नीलपार्थिवदो॥ वरुणवदयदसासुदयमदगावना॥ कुरुषामवधुसर्वसुखसुखउक्तिर्ग॥ द्वितीययाजनानादिप्रित
 काकनविर्ग॥ यथावर्णप्रयुर्नरमोनेत्यदवनेनवि॥ वरुदेवतावदनामासर्वसुखसुखका॥ सर्वप्रकाशकस्यापिनावध
 ल्वजगुय्य॥ नकनापिप्रकाशेघटमाननसर्वथा॥ सर्वस्वकीयनिधनमंगीकृतदानवा॥ नविचार्यवदसुखमन
 निकनयकभग॥ दसुयानाप्रियुर्नसुनामृत्तुर्विद्युमि॥ नत्यसुकाययोवधुसुकाकसुयुग॥ नयिसर्वनथाच
 कुर्यथापूर्वविद्योनिर्ग॥ गानाख्यसुसोवर्षुपूर्वसर्वापनिक्तिर्ग॥ याजनायनविकीर्णवदवायनप्रिय॥ नाजर्गकम
 रासुस्ययाजनायनविकीर्ण॥ दगसाहसुविकीर्णविद्युसासीनआयस॥ प्रितनकाकनविषाप्रयुर्नगगनसीमनि॥ प्राकान
 पत्रिषापनवयाहासकभक्तिर्ग॥ धजगपूनवीप्रवीद्याकायकसोहिन॥ खड्गयाभासुभविष्यगदाकार्मकधनिलि
 यागसुतसुखाविषयमदनालिहिशिर्ग॥ नदनिखर्वसुदुनवत्युदकाठिहिश॥ नकेरूपमाजानदानवयुद्धम
 दगादृष्टागोदनीमृद्धिदेवासुभवासवा॥ यनायानेनविक्किह्यापिनमत्यय॥ कचिद्वयुधधेवास्तुत्यरुः

३ना

5

सिद्धिर्वयध॥ कदिसमृद्धिविदिसु॥ कचिद्वगिनिदुन्दर्ग॥ ऊरुःकविहियापाननगुःकचिद्वरुद्धिर्ग॥ दृष्टासुनानामधि
 यादवानामीदुमीदनी॥ नुदुर्गसुमननर्णपुनाअयप्रजायनी॥ दधुवत्युधनाख्वागदवा॥ सधिनमरा॥ उचुधुजस्तयाह
 त्वाविक्किनममायनि॥ नमस्ययावर्नअहर्षयाप्रियुर्नासुना॥ वाधकसामदभानलेसगदुनगाधयि॥ त्वरुगनध्व
 नासाकविद्यनदवकधन॥ अगानिवदयामरुपुमधधियमियुग॥ दवागधसमाकृष्टनयनीस्वपूर्वप्रति॥ निनध्वज
 जगद्गर्गनिधुत्यमनूनन्दर्ग॥ निर्मनूयामहीसुवनिदवायमनावेनी॥ निहायनिमगुजागानि॥ नत्वासयुसागना॥ याद
 यानकिठनसुदुन्दर्ग॥ सीनाख्वावयसर्वनिष्ठासुहृयादिना॥ नयादिनाकापुताकृत्वदयानाकिठनधन॥ ग
 त्रिदयासुनास्वर्गपुननेमाविद्यनय॥ सुत्युक्तुधन॥ सवर्विदस्यवृषरुधज॥ प्रत्यवाचसनासुवनिनधमकस्याग
 मिनि॥ गगवक्रविवीरुगमिर्गुर्वमदध्वर्ग॥ निमतिद्यानधदवकेह्वदानाहधकम॥ त्वदाहवथनिमनिनामध्वनेव
 विद्यन॥ स्वयायस्यन्दनवर्गकवर्षाठिकामवि॥ त्वमवकस्यस्यवृद्धि॥ कस्याहिर्गुन॥ सुत्युक्तावक्रभार्गुनव

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

20

15 77

दक्षयन्तुना ॥ वल्लभावाजिनावदाक्षवायाकर्मभक्तयः ॥ वदाक्षियावर्गायां निभंत्वा सुनविमदिता ॥ मानाख्यस्य
 यल्लनवायाकर्मभक्तयः ॥ श्रीर्गुरुविराजितं कर्मना कंयविगुणः ॥ वर्षमात्रकृता भंति यविगुणः ॥ कर्मना
 गय श्रीर्गुरुविराजितं यजयन् ॥ सर्वस्वयर्ननामयविगुणापर्वमर्न ॥ वल्लभावाजिनावदाक्षमदिनीत्रयः ॥ स्याचिउ
 मलोचककुनागन्धमादनः ॥ विष्णोर्गतिनिहितं कुकेताभक्तमवव ॥ मन्मथजदधुस्यात्तापधिरुगवाविधिः ॥ यल्लव
 पुनदास्यात्तापनिवन्मयः ॥ धनर्ममधुतोदयाङ्गिनीवासेकीरवन् ॥ विष्णुभनामरुवकुवाहवायुर्विमन्त्रयि ॥ यमे
 मृत्पुत्रासुपुत्रिमिधविर्गुव ॥ वासवः मन्मथस्याल्लवन्वन्मवृत्ते ॥ रुवगर्भस्वर्तल्लानाद्यामकसर्वदवना ॥ ना
 मत्यावदिनीसील्लयस्सर्वपदानयः ॥ अर्धगदभविद्योभुगल्लानमगाभुक्तं ॥ यद्विभर्दुतोवाभामन्मथनर्मयुगः ॥
 मर्नयुतादित्यत्रयामनाथेनाकल्पावना ॥ यिनाकवायत्तं चवलिक्तासीत्तदामिवः ॥ स्वयान्यत्रसर्वतकल्पयामासर्गकः
 ॥ अर्धचक्रवर्षादासत्तानाविनामिवः ॥ स्वयान्यत्रकल्पांशुनतत्त्वाविमिताहवन् ॥ निमीत्युहीनिन्यानिविर्नगल्लज

ਪ੍ਰੀਤਮ

10

5

स्यमि अथ अक्षय न गता हत्वा रुद्राच विष्णुना त्रिणी ॥ सुखासं प्राथया मास न का दभ विक्षीयनी ॥ न गता यद्विद गाम्भे न का दभ वि
 क्षीयनी ॥ दक्ष विद्यामयी न का जेता क विजया रिधा ॥ वद संदीपना द्रुक् न दीपका सुं प्रकीर्तिनी ॥ चतु नाभी निरुदाना नाक्षी विद्या
 यनात्यना ॥ न सा माये न वा विष्णु वृक्षा लु र दिनी ॥ हं रे ना मुा रिधा ह्य म्भे सा क विजया रुद्र ॥ आकर्ष धा माया ना स पि पुन
 स न घा ठिनी ॥ का सी म्भे रिधा व नी ज न वा विज न गथा ॥ गाना म्भे रिधा धा का द्वि ना नू वा रु सर्व न ॥ विम कि विद्या नू यत्वा पः
 ला क विजया रिधा ॥ प्रया धा ना नार्थ च विम की न कर्ष यनी ॥ प्रा का ज ग म सं रु र्ध न क न वि पूर् न पुमि ॥ अ सुं या रु प र्ण वा य र्म
 य वृष र्ध ज ॥ पुना मि श्री नि दे त्या ना वि रु दे क न प रि धा ॥ रु ध न रु म्भे सा ह्वा ज म्भे दे त्या य मा स र्म ॥ न ग रु र्ध मि श्री द वी
 न का न क मि वि मु ना ॥ सा का रु ना रिधा न का म नू र्वा ला प र वि ष्णु मि ॥ हं नि वृ हं पु ना वृ हं न न न का प्र की र्ति ना ॥ विद्या ही म त्रि नं ह
 र्म य मु क्ष न य न न ॥ न का रु व मि सर्व धा र्द्व ना वि मु क्त ना धी ॥ म हा न र्म म हा रु ने पु न ना ना क सा द य ॥ दे त्या म्भे दान वा
 ह्ना न न र्म नि क ल मा वि न ॥ ह्य म व पु ना न का व दू का य पु का मि ना ॥ म हा विद्या दि द भे क र्द व द्वा व दू क रु न व ॥ य र्ध य ना र्का सु र्म

0

5

10

15

20

25

30

20

15

13

दमनस्यप्रपूजनी॥ ननवमहनीपूजामिधर्मपूजामीनिर्गमहाहनीविधिबहुतावेवप्रमूर्धम॥ सकृन्वनासुन्दयासंयाथः
 यल्लग्नसमलुचकचकनीसर्वविश्रासनीनिनी॥ दवमागर्ममगुरुवचिर्वाङ्मयागनस्वगुरुमय्यप्युपासनादिहि॥ द
 लादमनकगलेनमहुत्पसाग्रवाजलकर्त्तिनगङ्गासाक्षिसमपिहि॥ अन्नदानंयुक्तीनगुहसंगसमन्विनगुर्वयंकुन
 गविद्वान्दमनानापनकुर्म॥ गत्यसर्वसुनीयुजाहिनीकीप्रमिदाहवत्॥ गतिर्मगपगङ्गाक्षिमिदिहार्त्तविभक्त॥ सामाचि
 प्रवक्ष्यामिधनसिद्धिप्रविन्दुमि॥ गयोर्गमायमदनोममलेत्तुवयदा॥ हस्मीदगलदादविनगिपीमिधुखिना॥ ननप्रवापिसं
 गादमनस्यतुटानिव॥ गत्मीनर्त्तुसोराधर्महदानीत्तुतावेन॥ ननसुहृद्दयावनादहामयाप्रिय॥ नल्लेप्रोत्थनस्मात्
 दमनःप्रकटीकृता॥ दमननवयामकुर्वमध्यनपूजयन्॥ गत्यसर्वसुनीयुजामदनायहविद्युमि॥ गतिगस्मिन्नोदहामयव
 सुनवदिन॥ अथथागहूर्त्तसर्वकर्मकामायजायगे॥ गत्मादमनपूजादिकहर्त्तवीनवदिने॥ समूर्त्तदमनंशुक्लपयत्पात्र
 कवृज॥ दमननवधाकृत्वापूजयत्तदनकर्त्त॥ आनन्दधनवीजननवधाविनूनासदा॥ नवयुक्ताननत्वाद्यदमनंपूजयत्कुमान्॥

श्री ३००

10

5

अधानविग्रयायश्चदक्षिर्वरुमवदि॥ पुष्पीकंवादकेलस्यादिनिहामनाक्या॥ अशुभनकर्त्तव्यत्वावर्त्तनी
 वद्धिप्रसूतमृडार्त्तामयदमनोपनि॥ येनमासिचुर्द्धादमनानापनरवत्॥ उर्द्धवक्त्राशुमनुषद्दयनेप्रपूजयन्
 ॥ श्रीखलुसूतेदलभूषणविवासरवकानयन्॥ प्रथमादिवसकृत्वादिविवासनमूर्धम॥ सथाविवासरनवापिवर्षपूजाहसाप्र
 था॥ यागकातवहुर्द्धा॥ निष्ठावर्त्तनग॥ नवकाधेविनयाथसिद्धनलमहापुत्र॥ पात्रानि नवसंख्यादिमन्
 थादियुनिर्ग॥ उर्द्धवाकतमंनयस्त्रापयद्दमिकारुमः॥ दकृतामधुसंकेत्वाकृत्माद्येविविगर्क॥ अन्नादगन्मासिख्य
 निष्ठागमधुसंखिन्ना॥ नमोपूजयत्कामवर्त्तवानुषर्त्त॥ नकृवर्त्तनकृत्वावामदक्षिण्याप्रिय॥ नमिपीमिनिष्ठागार्थ्य
 चवार्त्तधनर्द्धनम॥ वसन्तसहिर्त्तकामपूजयत्सर्वसिद्धय॥ वाग्मर्वचुवनानिप्रियकामात्मकनव॥ कामायनमउद्धनवाध
 वनवर्त्तनी॥ कामवीजयथाकापूनमासकमासिख्य॥ नल्लेनमन्थावर्त्तनमिमुक्तमन्त्रावनाना॥ प्रीतिवदङ्गित्काम
 मिमुक्तावर्त्तक॥ एतेनश्चमवगीतिजामनमानरुषला॥ यमगामुत्तवर्त्तनकृत्वाविनाजिग॥ वामदक्षिण्याश्चत्तकाम

0

5

10

15

20

25

30

CENTIMETERS

20

15 १४

10

लुङ्गदयानुर्न॥ वसन्तप्रजयत्यश्वत्थदम्बव नमश्चर्ग॥ जेनवर्षामहस्रस्रपूर्युगादिर्न॥ दक्षदक्षनदधर्नानापुष्ट
 समुच्चय॥ सार्गकर्मप्रयुक्तपथपदीयादिदमयत्॥ सन्धकूपयुक्तदवभिसर्गदवमनीनिनी॥ कर्मसमवेयसंयककुमात्रीनः
 जयलुग॥ सुवासिनां चसंपुष्टयागिनी गममवयत्॥ वाक्कर्मपनिगः पूष्टा नोनादर्मनमानवा॥ नदगोहवनं पशुहुननत्रादि
 षले॥ स्वर्णहानसदये कुदियवमुमनानम॥ पूजेयित्वागगादविदमनानायुर्नमर्न॥ गत्यसंवत्सरीपुष्टा सहतामेतकच
 क॥ ॐ गिर्त्तयपतः प्राकृतिमयकुहमिदुसि॥ ॥ ॐ मिमीमदकात्यगानासंवादनकिर्त्तगमगुनाजयटनशा ॥ श्री००९
 दयवाव॥ दवमलाहमिद्वामिनहस्यमयर्नवर्न॥ ॥ निवडावाव॥ नहस्यमयिगदविसमयकुमयागग॥ समयसंयवः
 वस्त्रामिगुत्तखनहदग॥ षट्पलास्त्रामिनः पर्वजाहवय्ययहवग॥ ॥ ॐ कर्मसंयककुमेकैपुष्टाच्यथाधसपदवमदमनि
 दमिष्टिगुनामियी॥ रुताच्यमिदमनियथयागनवैष्ट्याउमोसपुर्णववय्यमगुर्नाद्विगयहवग॥ ॥ वदसंस्त्रामदकुणजवेक
 पुष्टाच्यथा॥ नवनाथेमदमनियथयागनकाययत्॥ गामूत्तसमययगृष्टवीयथकुर्म॥ नगपशुनिदवनिवकुव

5

हीवनायव॥ ॐ नृस्यः संपदागवाद्यार्णमत्यमवीटिका॥ अस्त्राविर्गमिदुपयावन्धवथादमष्टक॥ ॐ मापयकवर्षनिवसदा
 दमवाधिया॥ पर्वविममिमाक्रियः पूष्टासुत्तसंयकाग॥ ॐ दपशुनिवमगुष्टुनीयदानमहर्म्॥ पर्वय्यमगुष्टुदम
 पुष्टनिवथथा॥ वीनस्यः पाठमनिवादिद्याधवस्यपी० युक्तागदद्वैचरिमिद्यमानमाधनदद्वैक॥ ॐ नृस्यः संपयभुनिक
 चायेः पर्वविममि॥ वनुयुक्तमदमनियेष्टयादमयवच॥ ॐ वायेर्णमिनिवदास्य॥ ॐ वचद्वैम॥ अच्ययपनममनिवि
 मत्यभुनिदापयत्॥ अग्रदानं वमगुष्ट्यावकुदानं सुमिष्टक॥ मिथ्यादानं सवकोदीयथयागनयाजयत्॥ ॐ गिर्त्तयपगष्ट्या
 कृत्तिद्वयागं नृष्टुधिया॥ पतिपुत्री गथदासीदास॥ ॐ वचवर्धक॥ पतिवलापातिवला षट्गामूत्तपुदायका॥ ॐ ददकाकुष्ट
 काकुक्तिगत्यगयेवच॥ अथवेदमहस्यगामूत्तहनिषिधमि॥ आग्रयीकोरियाक्यादिगीयसुष्टगामर्न॥ ॐ गीयगुष्ट्याप
 ताहगुर्णहगुर्णिष्ट॥ पगुर्त्तखादिर्नचकुष्टवेवहगीयक॥ ॐ पर्वमर्तुमूर्खीकां नागः षष्टउदाहग॥ ॐ ददमिगिर्त्तयाकं ष
 थय्यदाभक॥ ॐ अथय्यगुवसलुगुतस्त्रीनिनकृर्न॥ ॐ गिर्त्तयपगष्ट्याकृतिमयकुहमिदुसि॥ ॥ दयवाव॥ नोगवही

20

15

१४

॥ गगनं कुरु न्यदानां मार्गं नीपा कर्षवन् ॥ मूर्तं जयलगाद विजुता कविजयी हवन् ॥ जलनपादो प्रकाशानलुक्त
 तन्वन् ॥ जेता कविजयी हवन् काया विवा नमः ॥ गत्या मूर्खं समाता कजयलु तो कनायकः ॥ गत्या हलु कर्न देता
 जयलु तो कविजयी हवन् ॥ गिथि सिद्धिपीन सिद्धिर्जय सिद्धि नव षट् निवा ॥ सिद्धि सिद्धि लुत्त प्रदि सिद्धि दिक्क रवन् ॥ आश्रया
 मषट् घटि काय कान्य पूर्व सखा के ॥ नाजी चतु सख द विना जीयु मपि मथका काम धन समाया ॥ गवक्रा लु सिद्धि दायकः
 मयनी र्य मयनी र्य मयनी र्य खया निवन् ॥ गिर्ग स र्ग यन प्रका क्ति मय कानु मिद्धि सि ॥ ॥ दयवाच ॥ दयवाच ॥
 सिद्धि मिथ्या गवि काम निवन् ॥ ॥ निवडवाच ॥ विक्रम सिंहा न मविद्धि र्ग मय द श्व नि ॥ वाता मानी यवा ईनी सः
 थया सजात गड चयी ॥ ० तु सखा यथानि मूख गगन वन् ॥ मूख नवा क्ति मय पुमिका मय यत्र गगन वन् ॥ विविदि न
 दविजया विक्कामे निर्वन् ॥ वाता मानी यवयना मेथुना न न मान सा ॥ यानो वकु खार्ग व सखा च दय स य ग ॥ तिथि लो

॥ १४ ॥

10

5

११

विपनिर्गर्ग जय कुर्याद ॥ निव ॥ यानि सखा क्ति मय पूर्व वन् ॥ ममाचनन् ॥ गलु लुति हनाद विमूखा इवार्थ गवन्
 गदव स र्ग व निष्ठा क्ति मय नि कि मिद्धि सि ॥ ॥ गिथि पीन सिं गम मनु नाज मय क्ति मय महा यना मय दयुध मय
 प्रका मय नादिया गगन क्ति मय षट् लु ॥ ॥ ॥ श्री ३३ मा मय नाली नमः ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ११ ॥

CENTIMETERS

15

10

5

0

5

10

15

20

25

पुस्तक

५.
(शक्तिसंगमतंत्र)
प्रथमखण्ड
समाप्त

